श्रीलोकनाथभट्टप्रणीतं

*

कृष्णाभ्युदयम्

रेन्द्रनाथ शर्मा

एम.ए.

कविशेखर इति प्रथितपट्टाभिधानस्य
श्रीवरदार्यस्य तनूद्भवेन

श्रीलोकनाथभट्टेन प्रणीतं

कृष्णाभ्युदयं

प्रेक्षणकम् ।

तच्च

मध्यप्रदेशान्तर्गतमहाकोशलविषयान्तःपाति-
जावालिपुरवासिना एम. ए. इति विरुदभाजा

श्रीनरेन्द्रनाथशर्मणा

एकमात्राधिगतं तालपत्रलिखितमादर्श-
पुस्तकं पर्यालोच्य हिन्दीभाषयाऽनूद्य
भूमिकया परिशिष्टैश्चालङ्कृत्य

सम्पादितम्

प्रथमं संस्करणम्]   १९६४   [मूल्यं त्रीणि रूप्यकाणि
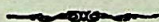
मुद्रक :—
शुभचिन्तक प्रेस
दीक्षितपुरा, जबलपुर (म. प्र.)
टेलीफोन—२५५१

★

प्रकाशक :—
प्रो. जगदीशलाल शास्त्री
प्रेमनगर
जबलपुर (म. प्र.)

:: भूमिका ::

प्रस्तुत प्रेक्षणक 'कृष्णाभ्युदय' तालपत्र पर ग्रन्थलिपि में लिखित एवं एकमात्र उपलब्ध हस्तलिखित पुस्तक पर आधारित है। यह आदर्शपुस्तक तंजोर के सरस्वती महल पुस्तकालय में सुरक्षित है। इसका विवरण बर्नेल महोदय कृत हस्तलिखित पुस्तकों की सूची के १६८ वें पृष्ठ पर संख्याक्रमांक १०७०१ के अन्तर्गत मिलता है।

इस हस्तलिखित पुस्तक का आकार १५½ × १½ है। इसके नौ पन्ने : अठारह पृष्ठ हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर छः पंक्तियाँ हैं। ग्रन्थ संख्या १५० है। इसके रचयिता लोकनाथभट्ट हैं। पंक्तियों में कई वर्ण नष्ट हो गए हैं, किन्तु पुस्तक पूर्ण है।

इसकी प्रस्तावना से मालुम होता है कि इसकी रचना श्री वरदार्य के पुत्र श्रीलोकनाथ भट्ट ने की। श्री वरदार्य का प्रसिद्ध नाम कविशेखर था। जनश्रुति के अनुसार लोकनाथभट्ट विश्व-गुणादर्शचम्पू के निर्माता वेङ्कटाध्वरी के मामा थे। (१) वेङ्कटाध्वरी का काल ईसा की सत्रहवीं शती का मध्यभाग है। लोकनाथ भट्ट का समय भी सत्रहवीं शती का मध्यभाग ही होगा।

इनका आवास दक्षिण भारत में था। प्रस्तुत प्रेक्षणक कांजीवरं के अधिपति श्रीहस्तिगिरिनाथ के वार्षिक ब्रह्मोत्सव पर खेला गया था। इसका संकेत हमें इस प्रेक्षणक की प्रस्तावना से मिलता है। भरतवाक्य में तत्कालीन राजा के नाम का उल्लेख नहीं है।

---

(१) द्रष्टव्य—आदर्शपुस्तकों का विवरणात्मक सूचीपत्र, मद्रास।

यद्यपि प्रेक्षणक का दृश्यस्थल उत्तरभारत की मधुरापुरी है तो भी इसमें दक्षिण भारत के स्मारक कुछ संकेत अवश्य मिलते हैं, जैसे मथुरा में घूमती हुई दिव्यादेशिनी विश्ववेदिनी महिषपुर (मैसूर) के बने कर्णभूषण पहने हुए हैं। (१)

कृष्णाभ्युदय उपरूपक है। भारतीय जनता के आराध्य देवता देवकी-पुत्र श्रीकृष्ण का जन्म इस उपरूपक की आधिकारिक वस्तु है। दैवज्ञों ने कहा था कि मथुरा के नरेश कंस की मृत्यु देवकी की आठवीं सन्तति के द्वारा होगी। कंस ने भयभीत होकर देवकी के सात अपत्यों का वध करवा डाला। देवकी की आठवीं सन्तान श्रीकृष्ण थे जिन्हें वह न पा सका। क्योंकि देवकी के पति वसुदेव छल से नन्दगोप की शिशु कन्या को उठा लाए थे और कन्या के स्थान पर श्रीकृष्ण को रख आए थे। अज्ञानवश कंस ने उस कन्या को देवकी की आठवीं सन्तति समझा और मार डाला। इस प्रकार उसके भावी घातक शिशु श्रीकृष्ण बच गए।

प्रस्तुत कृति में देवकी को अपनी सात कन्याओं के वध का शोक और भावी पुत्रजन्म की चिन्ता निरूपित है। विश्ववेदिनी नाम की दिव्यादेशिनी उसे धैर्य बंधाती है। अन्त में पुत्रजन्म से उसे आनन्द होता है।

उपरूपक में रूपक के सदृश चिन्ह होते हैं। (२) रूपक में नट में अनुकार्य के रूप का आरोप होता है। (३) उपरूपक में भी नट अनुकार्य पात्रों का रूप धारण कर लेते हैं। कृष्णाभ्युदय की प्रस्तावना में नट-सूत्रधार संवाद उक्त कथन का परिचायक है। नृत्तदीपिका विश्ववेदिनी की भूमिका में अभिनय करती है। (४)

---

(१) माहिषदन्तपत्ररुचिरा—५, (२) उपगतं सादृश्येन रूपकमिति।
(३) रूपारोपात्तु रूपकम् (४) सूत्रधार :— इयमस्मत्सखी नृत्त-दीपिका दिव्यदैवज्ञाया विश्ववेदिन्या भूमिकामादाय......

अन्य नेता भी अपने अपने अनुकार्य चरित्रों का अभिनय करते हैं।

उपरूपक के कई प्रकार हैं। अग्निपुराण में उपरूपक के सत्ताईस प्रकारों का निर्देश है। विश्वनाथ कविराज के समय तक उपरूपक के अट्ठारह प्रकार ही रह गए। उपरूपक का एक प्रकार प्रेक्षणक है जिसे अग्निपुराण में प्रेङ्खण कहा गया है। अग्निपुराण में प्रेङ्खण का उदाहरण त्रिपुरमर्दन है। प्रस्तुत उपरूपक भी प्रेक्षणक व प्रेङ्खण है। इसकी प्रस्तावना में नटी सूत्रधार से पूछती है कि हम किस मनोहर उपरूपक से शिक्षित समाज को प्रसन्न करें। सूत्रधार कहता है— 'कृष्णाभ्युदय नामक प्रेक्षणक से।' इस साक्ष्य से सिद्ध हो जाता है कि कृष्णाभ्युदय प्रेक्षणक नाम का उपरूपक है।

साहित्य-शास्त्र में प्रेक्षणक को प्रेङ्खण, प्रेङ्खणक, और प्रेक्षणीयक भी कहा है। किन्तु अभिनवगुप्त का 'प्रेरण' इससे सर्वथा भिन्न है, क्योंकि प्रेरण के लक्षण में अभिनवगुप्त ने हास्य और प्रहेलिका होने का निर्देश किया है (१) जबकि साहित्य शास्त्र में निरूपित प्रेङ्खण या प्रेक्षणक के लक्षण में हास्य और प्रहेलिका दोनों का निर्देश नहीं है।

प्रेक्षणक एकांकी रूपक होते हैं। नृत्त प्रधान होने से इन्हें उपरूपक कहने लगे। नाटकलक्षणरत्नकोश में सागरनन्दी ने नृत्त रूपक की जो विशेषताएँ कहीं हैं वे प्रायः प्रेक्षणक में मिलती हैं। नृत्त-रूपक का अभिनय ताल और लय पर आश्रित रहता है। (२)ताललयाश्रित नृत्त प्रधान रचना को नर्तनक भी कहा है। नृत्त-रूपक की प्रायः सभी विशेषताएँ कृष्णाभ्युदय में मिलती हैं।

---

(१) अभिनवभारती भाग १ पृ० १८०–८१ "हास्यप्रायं प्रेरणन्तु स्यात्प्रहेलिकयान्वितम्।"

(२) "नृत्तं ताललयाश्रितम्" द० रू०

साहित्यशास्त्र में प्रेक्षणक की विशेषताओं का पर्याप्त वर्णन किया गया है। शृङ्गारप्रकाश में भोजराज (११०० ई०) ने प्रेक्षणक के विषय में इस प्रकार लिखा है—

रथ्यासमाजचत्वरसुरालयादौ प्रवर्त्यते बहुभिः।
पात्रविशेषैर्यत्तत्प्रेक्षणकं कामदहनादि ॥

गली में, समाज में, चौराहा पर, मद्यशाला व देवमन्दिर में बहुत से विशेष प्रकार के पात्रों द्वारा जिसका प्रदर्शन किया जाय उसे प्रेक्षणक कहते हैं, जैसे कामदहन।

रामचन्द्र गुणचन्द्र (१२०० ई०) ने नाट्यदर्पण में भोज के शृङ्गारप्रकाश से ही प्रेक्षणक का लक्षण उतारा है।

सागरनन्दी (१२०० ई०) प्रेक्षणक को नृत्तरूपक मानते हैं। उनके अनुसार नृत्तरूपक का लक्षण इस प्रकार है।

"अशेषभाषोपशोभितं शौरसेनीप्रधानं गर्भविमर्शशून्यं तल्लक्षणयुक्तञ्च । सर्ववृत्तिसम्पन्नम् । प्रतिमुखसन्धिप्रवेशक-विष्कम्भका अत्र न कर्तव्याः। परिवर्तकयुक्तं प्रयत्नतः कार्यम्। नियुद्धसम्फेटयुतं विपदनुचिन्ताबहुलञ्च । अतः सूत्रधारो न विधेयः। नान्दी उपक्षेपश्च विधेयः। यथा बालिवधः।"

इस लक्षण के अनुसार नृत्तरूपक में केवल प्रतिमुखसन्धि का बहिष्कार किया गया है जबकि प्रेक्षणक में गर्भ और अवमर्श को त्याज्य कहा गया है। नृत्तरूपक और प्रेक्षणक में यही अन्तर है।

भावप्रकाशन के निर्माता शारदातनय (१३०० ई०) के अनुसार (१) प्रेक्षणक में गर्भ और अवमर्श का होना प्रायिक है। नान्दी का पठन नेपथ्य में ही होना चाहिए। कैशिकी, भारती, सात्त्वती और आरभटी इन वृत्तियों में से किसी वृत्ति का भी प्रयोग हो सकता है।

किन्तु सूत्रधार का होना इन्हें सर्वथा अभीष्ट नहीं है।

कविराज विश्वनाथ (१४०० ई०) ने साहित्यदर्पण में प्रेक्षणक के विषय में लिखा है कि उसमें गर्भ और अवमर्श सन्धियाँ नहीं होतीं; विष्कम्भक और प्रवेशक नहीं होते। सूत्रधार भी नहीं होता। उसमें रोप-भाषण, बाहु-युद्ध तथा सभी वृत्तियाँ होती हैं। प्ररोचना और नान्दी नेपथ्य में पढ़ी जाती है। विश्वनाथ के मत में बालिवध सर्वोत्कृष्ट प्रेक्षणक है। (२)

---

(१) पूर्वं नेपथ्यपाठेन नान्दी तस्य विधीयते।
क्वचिद्गर्भावमर्शौ स्तः क्वचिद्वृत्तिचतुष्टयम् ॥
क्वचिन्नेपथ्यवाक्याढ्यं न कदाचन सूत्रधृक्
एवं प्रेक्षणकं विद्याद् यथा त्रिपुरमर्दनम् ॥

(२) साहित्यदर्पण ६

गर्भविमर्शरहितं प्रेङ्खणं हीननायकम्।
असूत्रधारमेकाङ्कमविष्कम्भप्रवेशकम्।
नियुद्धसम्फेटयुतं सर्ववृत्तिसमाश्रितम्।
नेपथ्ये गीयते नान्दी तथा तत्र प्ररोचना ॥

विश्वनाथ से कुछ समय पूर्व (१३५० ई०) अमृतानन्द योगी हुए हैं जिन्होंने अलङ्कारसंग्रह की रचना की। इन्होंने प्रेक्षणक की कुछ अन्य विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। इनके अनुसार प्रेक्षणक में मागधी और शौरसेनी प्राकृत हीननायक की चेष्टाओं का वर्णन, नेपथ्य में गीत नाट्य का प्रयोग और प्रेक्षणक का प्रयोजन कोई देवकार्य होना चाहिए। (१)

ईसा की सत्रहवीं शती के अन्तिम भाग में कामराज दीक्षित ने काव्येन्दुप्रकाश की रचना की। काव्येन्दुप्रकाश का प्रेक्षणक लक्षण साहित्यदर्पण के प्रेक्षणक लक्षण से समता रखता है। (२)

---

(१) गर्भावमर्शहीनं वा मुखनिर्वहणान्वितम्।
सूत्रधारविहीनं च सर्ववृत्तिसमाश्रितम्॥
नियुद्धसम्फेटयुतं परिवर्तकभूषितम्।
मागधी शौरसेनी च हीननायकचेष्टितम्॥
नेपथ्ये गीतनाट्यं च परत्रैव प्रयोजनम्।
अप्रवेशकविष्कम्भमेकाङ्कं प्रेक्षणं विदुः॥
निदर्शनमिह ज्ञेयं वस्तु वालिवधादिकम्।

(२) प्रेङ्खणं सूत्रधारेण सहितं हीननायकम्।
हीनं गर्भविमर्शाभ्यामेकाङ्कं ख्यातनायकम्।
वीथ्यङ्गश्लिष्टनान्दीकं निर्विष्कम्भप्रवेशकम्
नियुद्धसम्फेटयुतं सर्ववृत्त्याश्रयं विदुः
नेपथ्ये गीयते नान्दी स्यात्तथात्र प्ररोचना॥

ईसा की ग्यारहवीं शती से लेकर ईसा की सत्रहवीं शती तक की अवधि में साहित्य-शास्त्रियों द्वारा किए गए प्रेक्षणक के लक्षणों से ज्ञात होता है कि इसमें प्रायः गर्भ और अवमर्श सन्धियाँ नहीं होतीं। विष्कम्भक और प्रवेशक भी नहीं होते। प्रधाननायक प्रख्यात वंश का होता है। नान्दी और प्ररोचना नेपथ्य में पढ़ी जाती हैं।

विश्वनाथ, अमृतानन्द और कामराज प्रेक्षणक में हीन-नायक का होना चाहते हैं। किन्तु कृष्णाभ्युदय में श्रीकृष्ण उत्कृष्ट नायक हैं। प्रतिनायक कंस ही हीननायक है जिसके दुश्चरितों का निर्देशमात्र इस प्रेक्षणक में मिलता है।

प्रेक्षणक की सभी विशेषताओं में से एक विशेषता पर विशेष बल दिया गया है कि उसमें सूत्रधार नहीं होना चाहिए। कृष्णाभ्युदय में नटी और सूत्रधार दोनों मञ्च पर आते हैं। इससे स्पष्ट है कि प्रेक्षणक का लक्षण करते समय परवर्ती साहित्य-शास्त्रियों के ध्यान में प्रस्तुत प्रेक्षणक नहीं था और लोकनाथभट्ट ने प्रस्तुत प्रेक्षणक में साहित्यिक परम्परा की अवहेलना की है।

भावप्रकाशन के रचयिता शारदातनय का कथन है कि नान्दी और प्ररोचना का गान नेपथ्य में होना चाहिए, रङ्गमञ्च पर नहीं। किन्तु प्रस्तुत प्रेक्षणक में नान्दी-प्ररोचना का प्रदर्शन रङ्गमञ्च पर होता है जो कि नियम के प्रतिकूल है। सम्भव है कि या तो लोकनाथभट्ट ने प्रेक्षणक की इस विशेषता की ओर ध्यान नहीं दिया अथवा आदर्शप्रतियों के लेखक नान्दी के आरम्भ में 'नेपथ्ये' लिखना भूल गए।

साहित्यशास्त्र के अनुसार मुख और निर्वहण सन्धियों से ही प्रेक्षणक की कथावस्तु का विन्यास होता है। प्रतिमुख सन्धि का होना वर्जित है। गर्भ और अवमर्श सन्धियों का होना प्रायिक है। अतः प्रस्तुत प्रेक्षणक में हम मुख और निर्वहण सन्धियाँ ही पाते हैं।

इस प्रेक्षणक की केन्द्र बिन्दु दैवज्ञा विश्ववेदिनी है। वह मथुरा की स्त्रियों को सौभाग्य बतलाती है। वह दक्षिणापथ से आई है। आज उसकी बाईं आँख फड़क रही है। आज उसे अवश्य लाभ होगा। वह वसुदेव की पत्नी देवकी के घर आती है। देवकी गर्भिणी है। वह अपने जीवन की अतीत घटनाओं से अतिव्याकुल है। उसकी सात नन्हीं नन्हीं बच्चियों को दुष्ट कंस ने मार डाला है। अब आठवीं सन्तति की भी वही दशा होगी।

विश्ववेदिनी उसे धैर्य बंधाती है। भगवती काली की कृपा से उसके वाक्य कभी मिथ्या नहीं उतरते। वह देवकी के हाथ-पाँव की रेखाओं को देखती है। रेखाओं से पता चलता है कि देवकी को पुत्रलाभ होगा। वह देवकी के गर्भमनोरथ को भी प्रकट करती है जिससे देवकी को उस पर पूर्ण विश्वास हो जाता है।

इस प्रकार इस प्रेक्षणक में मुख सन्धि का निर्वाह उत्तम ढंग से किया गया है।

श्रीकृष्ण के जन्म से निर्वहण सन्धि का प्रारम्भ होता है। दिव्य मंगलमय वाद्यों का घोष, पुष्पों की वर्षा, मधुर गीत और नृत्य श्रीकृष्णजन्म का अभिनन्दन करते हैं। देवताओं के साथ

पितामह का प्रवेश होता है। वे शिशु का नामकरण करते हैं और उसे आशिष देते हैं। भरतवाक्य में शुभ आशंसाओं के साथ प्रेक्षणक का अन्त होता है।

प्रेक्षणकों की कथावस्तु प्रायः रामायण, महाभारत, पुराण और साम्प्रदायिक कथानकों से सम्बद्ध होती है। सम्भव है कि वह धर्मनिरपेक्ष कथानकों पर भी आधारित रही हो। किन्तु आजकल के उपलब्ध प्रक्षणकों से पता चलता है कि प्रेक्षणकों जैसा रोचक साहित्य भी धार्मिक परम्पराओं से मुक्त नहीं था। भास्कर और विरूपाक्षदेव के उन्मत्तराघव नामक प्रेक्षणकों का आधार जगद्वन्द्या सीता और भगवान राम हैं, यद्यपि इन दोनों प्रेक्षणकों की कथा रामायण की कथा से भिन्न है।

विश्वनाथकृत सौगन्धिकाहरण के कथानक का महाभारत के वनपर्व से सम्बन्ध है। प्रस्तावना में इसे प्रेक्षणक माना गया है। साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ इसे व्यायोग मानते हैं। किन्तु साहित्यदर्पणकार ने इसी कृतो को व्यायोग माना होगा इसमें संदेह है। इससे भिन्न इस नाम का व्यायोग भी हो सकता है जो आज उपलब्ध नहीं है। डाक्टर कीथ और आचार्य कपिलदेव इसी उपलब्ध कृती को व्यायोग मानते हैं।

नृसिंहविजय, वालिवध, त्रिपुरमर्दन और कामदहन प्रेक्षणक हैं। इनके शीर्षकों से ही मालूम हो जाता है कि इनके कथानकों का आधार पौराणिक है। मूल कथानक में परिवर्तन कर देना प्रेक्षणक साहित्य की स्वाभाविक विशेषता है।

प्रस्तुत प्रेक्षणक का सम्बन्ध महाभारत एवं पुराणों में वर्णित कृष्णजन्म के कथानक से है। ब्रह्मत्र वैद्यनाथ का भैरव-विलास

साम्प्रदायिक रचना है। इसकी प्रस्तावना से पता चलता है कि वैद्यनाथ के समय तक कई साम्प्रदायिक प्रेक्षणकों की रचना हो चुकी थी।

गलियों में, समाज में, चौराहा में तथा मन्दिरों में खेले जाने से प्रेक्षणक साहित्य की लोकप्रियता का पता चलता है। मूल कथानक के किसी एक अंश पर आधारित होने एवं रूपकों के स्थायी तत्त्वों से शून्य होने के कारण प्रेक्षणक साहित्य चिरकाल तक जीवित न रह सका। यह साहित्य अब लुप्तप्राय हो गया है। इसकी आदर्श पांडुलिपियाँ भी बहुत कम मिलती हैं। प्राप्य पांडुलिपियाँ भी जीर्ण-शीर्ण हैं। इनका संशोधन कार्य सरल नहीं है॥

आभार प्रदर्शन :—

संस्कृत, पाली और प्राकृत भाषाओं एवं साहित्य के विश्वविख्यात विद्वान्, एम. ए. एल. एल. बी., डी. लिट्. आदि अनेक पद विभूषित तथा मध्यप्रदेशीय जबलपुर विश्वविद्यालय में संस्कृत-विभाग के प्रमुख आचार्य डाक्टर हीरालाल जी जैन का मैं बहुत आभारी हूँ जिनके अनुपम साहित्यिक जीवन से प्रेरित एवं उत्साहित होकर मै इस प्रेक्षणक के सम्पादन में अग्रसर हुआ। इस ग्रन्थ के सम्पादन में जबलपुर विश्वविद्यालय के अनुसन्धान विभाग में सहायक आचार्य श्री बाबूलाल जी शुक्ल एम. ए. साहित्याचार्य से प्राप्त सहायता से मैं उऋण नहीं हो सकता।

श्री लोकनाथभट्टकृतं

कृष्णाभ्युदयं

प्रेक्षणकम्

(नान्दी)

क्वापि स्तन्यरसं प्रदातुमुचितां गोपाङ्गनाभूमिकां
या प्राप्ता तदसून्सह स्तनरसैः कृष्ण त्वमापीतवान् ।
अन्या त्वामिह विश्वसेत्कथमिति व्याहारिणीं मातरं
वीक्षन्स्मेरमुखेन्दुरङ्कशयितो मायाशिशुःपातु नः ॥१॥

अपि च

ब्रह्मस्तम्बं निजात्मन्यवधिविरहितं बिभ्रदानन्दसान्द्रं
तेजो यत्तच्छ्रुतीनामपि गतिविषयं नैति विश्वातिलङ्घि ।
मानुष्यं मायया तन्महितजनपरित्राणहेतोरवाप्तं
देवक्या भागधेयं दिशतु धृतदयं शाश्वतीं सम्पदं नः॥२॥

(नान्द्यन्ते सूत्रधारः)

सूत्रधारः—(नेपथ्याभिमुखमवलोक्य) आर्ये, इतस्तावत् ।

नटी—(प्रविश्य) अय्य, आणवेदु भवं । (आर्य, आज्ञापयतु भवान् ।)

सूत्रधारः—अद्य नस्सुप्रभातः यत्काञ्चीपुरपतेः श्रीहस्तिगिरिनाथस्य वार्षिकब्रह्मोत्सवे समवेताः सामाजिकाः समादिशन्ति— "अद्य विज्ञनटचूडामणे रसिकहृदयाह्लादकेन केनाप्यपूर्ववस्तुरूपेणोपरूपकेणास्मत्सभा सभाजनीया" इति

नटी—किं तं उवरूअअं जेण चमक्कारकारएण विअड्ढपरिसदं आराहइमो ? (किं तदुपरूपकं येन चमत्कारकारकेण विदग्धपरिषदमाराधयामः ?)

सूत्रधारः—(स्मरणमभिनीय) आर्ये, किं न जानासि ? अस्ति खलु कविशेखर इति प्रथितपट्टाभिधानस्य वरदार्यस्य पुत्रेण लोकनाथभट्टेन विरचितं कृष्णाभ्युदयं नाम प्रेक्षणकम् ।

तेनैव सुशिक्षिततद्रूपकप्रयोगैरस्माभिः परिषदियं तोषणीया । तद्वर्षासमयमधिकृत्य गीयताम् । तथा हि—

धारालैर्धृतशक्रचापरुचिरैः कूलङ्कषा ह्यापगाः
कुर्वद्भिस्सलिलात्मिकामिव महीमुन्नादिभिर्वारिदैः ।
फुल्लन्नीपशिलीन्ध्रकेतकरजो नूनं जिगीषोर्जग-
त्सेनाधूलिरिव प्रसूनधनुषो दिग्व्यापकं जृम्भते ॥३॥

नटी—(गायति)

गरुगब्भभारखिवण्णं
समहिअणीसत्तसंथरं चोलिं ।
घणरअप्पमुदिआ सिहिणी
दठ्ठूण धुणइ केअहिं ॥४॥
[गुरुगर्भभारखिन्नां
समधिकनिस्सत्त्वमन्थरां चोलिम् ।
घनरवप्रमुदिता शिखिनी
दृष्ट्वा धुनोति केशान् ॥४॥]

सूत्रधारः—अहो रागसौभाग्यम् । (निरूप्य) व्यञ्जयति च काव्यवस्तु गाथेयम । तथा हि—इयमस्मत्सखी नृत्तदीपिका दिव्यदैवज्ञाया विश्ववेदिन्यां भूमिकामादाय देवकीदेवीं लक्षणप्रमाणकथनेनाश्वासयितुं मधुरापुरराजमार्गमवतीर्णा प्रतिगृहं पर्यटन्ती वसुदेवगृहाभिमुखीव एवाभिवर्तते ।

यैषा—

धम्मिल्लाहितमल्लिका व्यतिकृतं गुञ्जाफलैर्मौक्तिकै—
र्हारं माहिषदन्तपत्ररुचिरा ताम्बूलगर्भानना
बिभ्राणा मदरज्यमाननयना संव्यानरुद्धस्तनी
लीलाकुञ्चितवामकूर्परधृतां पेटीं वहन्ती मुदा ॥५॥

तदावामप्यनन्तरकरणीयाय सज्जीभवावः ।

[इति निष्क्रान्तौ]

॥ प्रस्तावना ॥

(ततः प्रविशति यथोद्दिष्टा विश्ववेदिनी)

विश्ववेदिनी —(सहर्षं, परितो विलोक्य) अम्मो संपण्णसमिद्धसव्वत्थपरिपुण्णा संमोदमाणपोरजणमहुरा महुरा । (पेटिकां विलोक्य) एत्थ पडिघरं इत्थिआणं सोभग्गमंगललक्खणं दस्सअंतीए मह पेडिआ तण्डुलदिण्णारमुत्ताफलपडिपूरिआ । (विलोक्य) एतं क्खु महप्पणो वसुदेव्वस्स घरं । इदं खु तं । जाव प्पविसामि । (प्रविश्य) (वामाक्षिस्पन्दनं सूचयित्वा) ।

वामविलोअणपिसुणफ्फुरन्तं अज्ज मे कुसलं ।
(विमृश्य) एत्थ महदा फलेण होदव्वं ।
अवरं क्खु देवईए फल अहिअं किं णु तणअ—
दंसणादो ॥६॥

(विचिन्त्य) उइदावसरप्पवेसणाई राअउलाइ णाम । ता एत्थ बहिअतोरणत्थंवे अत्तलिहिदं राअउलावुत्तं जाणिअ पविसामि । (तथा करोति) ।

(अहो ! सम्पन्नसमृद्धसर्वार्थपरिपूर्णा सम्मोदमानपौरजनमधुरा मथुरा । अत्र प्रतिगृहं स्त्रीणां सौभाग्यमङ्गललक्षणं दर्शयन्त्या मम पेटिका तण्डुलदीनारमुक्ताफलपरिपूरिता । इदं खलु महात्मनो वसुदेवस्य गृहम् । इदं खलु तत् । यावत्प्रविशामि ।

वामलोचनपिशुनस्फुरद्भुज अद्य मे कुशलम् ।
अत्र महता फलेन भवितव्यम् ।

अपरं खलु देवक्याः फलमधिकं किं नु तनयदर्शनतः ॥६॥

उचितावसरप्रवेशनानि राजकुलानि नाम । तदत्र बाह्य-तोरणस्तम्भ आप्तलिखितं राजकुलवृत्तं ज्ञात्वा प्रविशामि ।)

(नेपथ्ये)

इदो इदो भट्टिणी । (इतो इतो भट्टिनी ।)

विश्ववेदिनी—(कर्णं दत्त्वा) (विलोक्य) एसा परिआरिआए अवलम्बिअआणा गब्भभरालसा देइ देवई इदो एव्व आअच्छइ । जा एसा (एषा परिचारिकयाऽवलम्ब्यमाना गर्भभरालसा देवी देवकीत एव आगच्छति । यैषा)

अज्ज अउरसोहग्गं अंगेहिं निअमच्छीणछीणेहिं ।
धारेंती अमिअरसं तिहुवणजीवादु इंदुलेहेव ॥७॥
[अद्यातुलसौभाग्यमङ्गैर्नियमक्षीणक्षीणैः ।
धारयन्त्यमृतरसं त्रिभुवनजीवातु इन्दुलेखेव ॥७॥]

(ततः प्रविशति यथोद्दिष्टा देवकी)

देवकी—हंजे, णिउणिए, अवि णाम तस्स जोईसरस्स वअणं सच्चं भवे । (हञ्जे, निपुणिके, अपि नाम तस्य योगीश्वरस्य वचनं सत्यं भवेत् ?)

निपुणिका—भट्टिणी, जोईसरस्स वअणं असच्चं ण होई।
(भट्टिनि, योगीश्वरस्य वचनमसत्यं न भवति।)

देवकी—अवि णाम अय्यउत्तस्स भाअहेआइ फलमुहाइ होंति ? अवि णाम महत्ताणं बम्हणाणं आसंसाओ सच्चा वा होंति ? अहवा किं एदिणा महोरहविजंभिदेण। अहं क्खु सा दुहभाइणी देवइ। (अपि नामार्यपुत्रस्य भागधेयानि फलमुखानि भविष्यन्ति ? अपि नाम महतां ब्राह्मणानामाशंसाः सत्या वा भविष्यन्ति ? अथवा किमेतेन मनोरथविजृम्भितेन। अहं खलु सा दुःखभागिनी देवकी।)

निपुणिका—भट्टिणी, अलं विसादेण। तादिसाणं महंत्ताणं भासिदं जं दंसिदसअललोअदिसाइमाहप्पं पुत्तं देवई जणइस्सदित्ति। अहवा कि इमाइ तुह सोहणलक्खणाइ अप्पमाणाइं ? (भट्टिनि, अलं विषादेन। तादृशानां महतां भाषितं यद् दर्शितसकललोकदिशामाहात्म्यं पुत्रं देवी जनयिष्यतीति। अथवा किमिमानि तव शोभनलक्षणानि अप्रमाणानि ?)

देवकी—हंजे, अणुभूअदे एव्व ताणं वि फलं। (हञ्जे ! अनुभूयते एव तादृगपि फलम्।)

निपुणिका—भट्टिणी, अलं णिव्वेदेण। दिट्ठिआ सव्वं कुसलोदक्कं भविस्सदि (सस्मरणम्) अज्ज विस्सवेद्दणित्ति दिव्वदेएणा कावि पडिघरं अडंदी मन्दं आअच्छंदी दिट्ठत्ति महरिआ भणिदं। जर

सा एत्थ आअच्छेदिति। (भट्टिनि, अलं निर्वेदेन। दिष्टया सर्वं कुशलोदर्कं भविष्यति। अद्य विश्ववेदिनीति दिव्यदेष्णा कापि प्रतिगृहमटन्ती मन्दमागच्छन्ती दृष्टेति मधुरिकया भणितम्। यदि सात्र आगच्छेदिति।)

देवकी—तदो किं ? (ततः किम् ?)

निपुणिका—तदो सव्वं विस्ससणिज्जं भवे। (ततः सर्वं विश्वसनीयं भवेत्।)

विश्ववेदिनी – अअं ओसरो अप्पणो पआसस्स (इत्यात्मानं प्रकाश्य) हंहो सुणह (अयमवसर आत्मनः प्रकाशस्य। हंहो शृणुत)

जंतूणं भालदेसे विहिपरिलिहिअं सव्वं एव्वाम्ह जाणे
वुत्तं जं देवलोए सरसिजभुअणे किं च पायाललोए।
दंसेदुं भइणीए विणिहिदमहिलं गब्भगब्भे णिहाणं
देवीए कालिआए .... ॥८॥

[जन्तूनां भालदेशे विधिपरिलिखितं सर्वमेवाहं जाने
वृत्तं यद्देवलोके सरसिजभुवने किञ्च पाताललोके।
दर्शयितुं भगिन्यै विनिहितमखिलं गर्भगर्भे निधानं
देव्याः कलिकायाः .... ॥८॥]

(देवकी निपुणिका च विश्ववेदिनीं दृष्ट्वा विस्मयमुपगच्छतः)

विश्ववेदिनी—(सस्मितम्) देवीए सोहणं देवीए सोहणं उत्तरूत्तराणुबंधं आअंदप्पदं। णमो अय्यं ते। (देव्याः शोभनं देव्याः शोभनमुत्तरोत्तरानुबन्धमानन्दप्रदम्। (साञ्जलि बन्धम्) नम आर्य्याय ते)

परमत्थं पवणिसा विअ ससंकलेसां जं·········हसं।
·········सक्खं गब्भे जा वहइ तं अहं वंदामि ॥६॥
(परमार्थं पर्वनिशा इव शशाङ्कलेश्यां य·········हंसम्।
·········साक्षाद् गर्भे या वहसि त्वमहं वन्दे ॥६॥)

देवकी—भद्दे, सागदं एत्थ उअविस (इत्यासनं दिशति) (भद्रे, स्वागतमत्रोपविश।

विश्ववेदिनी—अलं करोदु आसणं भोदी। (अलङ्करोतु आसनं भवती) (देवकी उपविशति)

विश्ववेदिनी—(उपविश्य, देवक्या मुख विलोक्य) किं मिलाअमाणं कमलं विअ देवीए वअणं ? (किं म्लायमानं कमलमिव देव्या वदनम् ?)

(देवकी विहस्य निपुणिकामुखमवलोकयति)

निपुणिका—अय्ये, तुए वि ण विदिअं किं णाम देवीए विसादस्स कालणं ? कदा वा समइस्सदि ? (आर्य्ये, तवापि न विदितं किं नाम देव्याः विषादस्य कारणम् ? कदा वा शमिष्यति।)

विश्ववेदिनी—अय्ये, भअवदीए कालिआए उवाअणं दिज्जइ।
(आर्य्ये, भगवत्यै कालिकायै उपायनं दीयताम्।)

(निपुणिका सकर्पूरपूगशकलानि ताम्बूलान्युपनयति।)

विश्ववेदिनी— (गृहीत्वा) णमो भअवदीए कालिआए (नमो भगवत्यै कालिकायै।)

(देवीं निर्वर्ण्य)

अंगम्मि अंगम्मि महाफलाइ
देवीए दीसंति सुलक्खणाइ।
[अङ्गे अङ्गे महाफलानि
देव्या दृश्यन्ते सुलक्षणानि।]

निपुणिका—अदो किं ? (अतः किम् ?)

विश्ववेदिनी—अदो सचीए अवि कंखणिज्जं
एसा अणुहोदुं पदं एत्थ जोग्गा॥१०॥
[अतः शच्या अपि कांक्षणीयं
एषानुभवितुं पदमत्र योग्या॥१०॥]

देवकी—एदाणं लक्खणाणं फलं इअं अवत्था ? (एतेषां लक्षणानां फलमियमवस्था ?)

विश्ववेदिनी—(पेटिकागर्भात्काञ्चनशलाकामादाय पुष्पाक्षता-दिभिरभ्यर्च्य साञ्जलिबन्धम्)

अज्जाए देवीए भअवदीए अक्खलिआए कालिआए ।
सच्चमईए सिध्धिसलाए सच्चं अत्थं दंसेहि मे अहिमदेदं ॥ ११ ॥
[आर्याया देव्या भगवत्या अस्खलितायाः कालिकायाः ।
सत्यमय्याः सिद्धिशलाके सत्यमर्थं दर्शय मेऽभिमतमिदम् ॥ ११ ॥]
इह कमलं इह कुलिसं इह कलसो एत्थ भाइधेअगदं ।
[इह कमलमिह कुलिशमिह कलशोऽत्र भागधेयगतम् ।]
(इति शलाकया निर्दिशति ।)

निपुणिका—तदो किं ? (ततः किम् ?)

विश्ववेदिनी—तासे सामन्तवहूसीमंताणं विभूसणं चलणं ॥ १२ ॥]
[तदस्याः सामन्तवधूसीमन्तानां विभूषणं चरणम् ॥ १२ ॥]
(पादं निर्वर्ण्य)

अहो से सोभाग्गं (अहो अस्याः सौभाग्यम् ।)

जावअरसाणुराओ मलिणीकरणं ति मम खु पडिहासो ।
णं अकति एदिस कुट्टिमरञ्जणा णइ ह उज्जलदि ॥ १३ ॥
[यावकरसानुरागः मलिनीकरणमिति मम खलु परिहासः ।
नूनमनन्तेदृशकुट्टिमरञ्जनाय उज्ज्वलति .... ॥ १३ ॥

निपुणिका—कि फलिदं एदेण ? (किं फलितमेतेन ?)

विश्ववेदिनी—एदेण सामंतादो देवीए विसादो त्ति ण आहणिअं।
(एतेन सामन्ततो देव्याः विषाद इति नाऽभणितम्।)
(पुनः शलाकां देवीहृदये निधाय सश्लाघम्।)

एक्कक्कपेमबंधणसमरसमेकक्क तुह अ दइअस्स ।
हिअअं अदिट्ठभेदं चिरविरहिणो विहाण अच्चेरं ॥१४॥
[एकैकप्रेमबन्धनसमरसमेकैकं तव च दयितस्य।
हृदयमदृष्टभेदं चिरविरहिणो विधानमाश्चर्यम् ॥१४॥

निपुणिका—अज्जाए साहु भणिदं (आर्यया साधु भणितम्।)
(सविषादस्मितम्) अदो खु सो अज्जउत्तो वि
विअहं वि दुक्ख अण'' च देवीए। (अतः खलु
स आर्यपुत्रोऽपि विभवमपि दुःख ''''च देव्यः।)

मअकलकलकंठी मंजुलारावरम्मा
अमिअ विअ सजंती अक्खरोत्ति उदारा।
ह्मिदपुरुवपवुत्तं कंठ आलावअंती
विवसअइ गिरा णो की सवत्तीण चित्तं ॥१५॥
[मदकलकलकण्ठी मञ्जुलारावरम्या
अमृतमिव सृजन्ती अक्षरोक्ती उदाराः।
स्मितपूर्वप्रवृत्तं कण्ठमालापयन्ती
विवशयति गिरा न किं सपत्नीनां चित्तम् ॥१५॥]

अदो देवीए पिअसहिभाव्वं भजंति सवत्तीओ। (अतः देव्याः प्रियसखिभावं भजन्ति सख्यः।)

देवकी—भद्दे, अदो क्खु एदाओवि मह किदे मिलाअंती। (भद्रे, अतः खलु एता अपि मम कृते म्लायन्ते।)

विश्ववेदिनी—णिउणिए, पेक्ख, देवीए। (निपुणिके, प्रेक्षस्व, देव्याः)

विअसिअकमलपलासच्छाआअदकंतिसोभग्गा ।
करुणासिनेहसीअलकडक्खिआ जअइ सिरिणिहा दिट्ठी॥१६।
[विकसितकमलपलाशच्छायात्मकान्तिसौभाग्या ।
करुणास्नेहशीतलकटाक्षिता जयति श्रीनिभा दृष्टिः ॥१६॥]

(देवकी अवचना तिष्ठति।)

विश्ववेदिनी—(आत्मगतम्) एदेण देवीए अपरितोसो विअ। तदो अभिप्पाअगदं अत्थं दंसेमि। (प्रकाशं, शलाकां वीक्ष्य) भद्दे, सिध्धिसलाकए अत्थं दंसेहि। (एतेन देव्याः अपरितोष इव। ततः अभिप्रायगतमर्थं दर्शयामि। भद्रे, सिद्धिशलाके ! अर्थं दर्शय।)

पाणिं प्पसारेहि पओहराओ लावण्णआरामणव्वप्पवालं ।
तिल्लोक्कसंजीवणसाहणांकं वामं णहाणीरुहसोपमाणं ॥१७॥
[पाणिं प्रसारय पयोधरयोर्लावण्यकारामनवप्रवालम् ।
त्रैलोक्यसञ्जीवनसाधनाङ्कं वामं सरसीरुहसोपमानम् ॥१७॥]

(देवकी अलसमन्थरं पाणिं प्रसारयति ।)

विश्ववेदिनी--(विलोक्य, सबहुमानम्)

चूदप्पवालसरसीरुहविद्दुमेसु कुंदसिरीसकुसुमेसु उमालभावो ।
देवीए हत्थकमलेक्खणे किं वि एदं, सक्कंतिरूअसउमाल-
गुणस्स रीइं ॥१८॥
[चूतप्रवालसरसीरुहविद्रुमेषु कुन्दशिरीषकुसुमेषु कुमारभावः ।
देव्या हस्तकमलेक्षणे किमप्येतत् सत्कान्तिरूपसुकुमारगुणस्य-
रीतिम् ॥१८॥]

निपुणिका - अय्ये, दिढं णिरूपेहि । (आर्ये, दृढं निरूपय ।)

विश्ववेदिनी--अय्ये, कुलदेवदे कालि, णमो दे । चिट्ठदु दाव लावण्णअं । वक्कुसउप्पत्तिं से णिरूवेमि ।
(आर्ये, कुलदेवते कालि नमस्ते । तिष्ठतु तावद् लावण्यकम् । अपत्यसमुत्पत्तिमस्या निरूपयामि ।)

देवकी--(जनान्तिकम्) हंजे, मह अभिप्पाअगदं किं एव्वं संदंसेइ ? (हञ्जे, ममाभिप्रायगतं किमेवं सन्दर्शयति ?)

निपुणिका——भट्टिणि, एसा क्खु विस्सवेइणी । (प्रकाशम्) अय्ये साहु णिरूपणिज्जं (भट्टिनि, एषा खलु विश्ववेदिनी । आर्ये, साधु निरूपणीयम् ।)

विश्ववेदिनी——इमाओ वक्करेआओ (इति क्रमेण रेखाषट्कं दर्शयित्वा, विमृश्य) इमा असमीईणा। (इति सविलक्षमपवार्य, दृष्टिं व्यावर्त्य) पडिहदममंगलं, पडिहदममंगलं, संतं पावं, संतं पावं । (पुनर्विमृश्य) विदिणा सव्वलोआहिमदं एव्व समाअरिदं अदिक्कंदेण वुत्तंतेण। (पुनः शलाकया सप्तमी-मपत्यरेखां चिरं परामृशति) (इमा अपत्यरेखाः। इमा असमीचीनाः । प्रतिहतममङ्गलम्, प्रतिहत-ममङ्गलम्। शान्तं पापम्, शान्तं पापम्। विधिना सर्वलोकाभिमतमेव समाचरितमतिक्रान्तेन वृत्तान्तेन ।)

निपुणिका——अय्ये किं अत्थं ? (आर्ये, कोऽर्थः ?)

विश्ववेदिनी——जाणिदं अंबाए अणुग्गहेण । (ज्ञातमम्बाया अनुग्रहेण ।)

निपुणिका——कहं विअ ? (कथमिव !)

विश्ववेदिनी——सग्गतमिव्व चंदं अपुण्णं एव्व देवीए गब्भादो णिक्कमिअ ट्ठाई जीवंतं चिट्ठई । (स्वर्गतमिव चन्द्रमपूर्णमेव देव्या गर्भतो निष्क्रम्य स्थायी जीवन् तिष्ठति ।)

देवकी—–णिउणिए, एदं वि णूणं इत्थि विअ पडिभाइ।
(एतदपि नूनं स्त्रीव प्रतिभाति ।)

विश्वभेदिनी—–(पुनरष्टमीं रेखां शलाकया निर्दिश्य सानन्दम्)
अहो देवीए भाअहेअं ।

विस्संभराभारहरो धुरीणः
विस्सातिओ विस्सविहाणदक्खो ।
आकप्पमव्वाहदपुण्णकंती
दिप्पाक्कजोइ अदु वासअस्स ॥ १६ ॥
(अहो देव्या भागधेयम् ।)

[विश्वम्भराभारहरो धुरीणः
विश्वातिगो विश्वविधानदक्षः ।
आकल्पमव्याहतपुण्यकान्ति—–
दीप्तार्कज्योतिरथ वत्सरस्य ॥१६॥]

जस्स पआवो दणुसुदहिअएसु जलइ मोलिसुं अहुणा ।
विलसदि दिसापईणं तिहुवण अहिलं वसे होइ ॥ २० ॥

सक्कं सरस्सईपइणो वि ण जस्स विहवं वण्णेदुं तारिसो तुवं कुमालो जणिस्सदि ।

[यस्य प्रभावो दनुसुतहृदयेषु ज्वलति मौलिषु अधुना ।
विलसति दिशापतीनां त्रिभुवनमखिलं वशे भविता ॥२०॥]

(शक्यं सरस्वतीपतेरपि न यस्य विभवं वर्णयितुं तादृशस्त्वां कुमारो जनिष्यते ।)

निपुणिका—अज्जाए पसादेण पच्चक्खं विअ कुमालं भावेमि । (आर्यायाः प्रसादेन प्रत्यक्षमिव कुमारं भावयामि ।

देवकी—(स्मितं कृत्वा) भद्दे, एदं मे पुत्तमुहसिसिरपुण्णणइजलसमुहस्स पिपासुणो मिअतिण्णासंतिकरावगाहणं पाणं अ प्पाणं च । (भद्दे, एतन्मे पुत्रमुखशिशिरपुण्यनदीजलसमूहस्य पिपासोर्मृगतृष्णाशान्तिकरावगाहनं पानञ्च प्राणं च)

विश्ववेदिनी—मा मा एव्वं । इदं खु परमत्थं । तुह गब्भे अदिक्कंदंतं सव्वं मिअतिण्हा त्ति ण भणिदव्वं । सुणादु देइ । देअासुलसिद्दगंधव्वजक्खरक्खसप्पमुहेहिं पूजिदाणं अपच्चाणं सिद्धी असिद्धी मए कहिआदो कदापि विसंवादं ण गच्छइ । सव्वं जहाप्पमाणं करिअदु मह भासिदं । (मा मैवम् । इदं खलु परमार्थं प्रस्तुतम् । तव गर्भे अतिक्रामत् सर्वं मृगतृष्णेति न भणितव्यम् । शृणोतु देवी । देवासुरसिद्धगन्धर्वयक्षराक्षसप्रमुखैः पूजितानामपत्यानां सिद्ध्यसिद्ध्यो मया कथिताः कदापि विसंवादं न गच्छन्ति । सर्वं यथाप्रमाणं करोतु मम भाषितम् ।)

देवकी—भद्दे, प्पमाणं करोमि जइ सो मह वच्चम्मिआ पावसीलो ण भवे। (भद्रे प्रमाणं करोमि यदि स मम अपत्येषु पापशीलो न भवेत्।)

विश्ववेदिनी—मा भआहि, वेसक्खिदादिअं सव्वं जो दुज्जणो, जस्स अत्तणो म्मिआ वसे अपो, देई देवइ इत्थि ति को णु तं, तस्स महापुरुसस्स तिलोअक्खमस्स को ओ कंसप्पमुहो असुरवग्गो ? (मा बिभेहि, शत्रुतादिकं सर्वं यो दुर्जनः, यस्यात्मनः देवी देवकी स्त्रीति को नु तं, तस्य महापुरुषस्य त्रैलोक्य। क्षमस्य कः कंसप्रमुखोऽसुरवर्गः ?)

देवकी—भद्दे, तुह भणिदं दाव वीहलाए मोरीए मेहमाला-गज्जिदं विअ आसासणमेत्तं मह होइ। (भद्रे, तव भणितं तावद् विह्वलाया मयूर्या मेघमालागर्जितमिव आश्वासनमात्रं मम भविष्यति।)

विश्ववेदिनी—देइ, सव्वहा अज्जाए कालिआए पसादलद्धं वअणं प्पमाणीकरीअदु। (विभाव्य सशिरःकम्पम्) एदस्स कंसहदअस्स अण्णाआअरणं देवीए विसादस्स कालणं। पसववेदणा अ इअं अणंतरे एव्व मुहुत्ते संभवइ। (देवि, सर्वथा आर्यायाः कालिकायाः प्रसादलब्धं वचनं प्रमाणीकरोतु।

एतस्य कंसहतकस्यान्यायाचरणं देव्या विषादस्य कारणम् । प्रसववेदना च इयमनन्तर एव मुहूर्त्ते सम्भविष्यति ।

देवकी—भद्दे, अहग्गणदसा पादसरणं अरूहदि । (भद्रे, अहर्गणदशा पादसरणमारोहति ।)

विश्ववेदिनी—(पुनर्देवीं निर्वर्ण्य) देवीए दोहलगुणाइ सिविणिअ । विलसिदं च कहेमि । (देव्या दोहदगुणान् स्वप्नविलसितं च कथयामि ।)

निपुणिका—कहं विअ ? (कथमिव ?)

विश्ववेदिनी—अअं देवीए संकप्पो (अयं देव्याः सङ्कल्पः)

बिंदावणम्मि पुण्णे सुगहंसाहिं भद्दाइ पुप्फाइ ।
लीलाए अ पडिअंती गोकुलमज्झम्मि वसेअ अहं ॥२१॥

[वृन्दावने पुण्ये शुकहंसैः भद्राणि पुष्पाणि ।
लीलया च पर्यटन्ती गोकुलमध्ये वसेयमहम् ॥२१॥]

रम्मा तणु सुमाला मंगलवलअं सहं तव""णवं
जा गोवद्धणसेलं धारेदुं महइ भुअलदा एसा ॥२२॥

[रम्या तनुसुमाला मङ्गलवलयं सहं तव""नवम्
या गोवर्द्धनशैलं धारयितुं महती भुजलता एषा ॥२२॥]

किञ्च

भुअगपइहोअकं विअ मणिमअसिंहासणम्मि आसीणा ।
........वाउलेहिं सिविणे जअमंगलेहिं हिंडुज्जए ॥२३॥

[भुजगपतिभोगकमिव मणिमयसिंहासन आसीना ।
......वातुलैः स्वप्ने जयमङ्गलैर्हिण्डामि ॥२३॥]

देइ, ण पारेइ सच्चं चदुराणणो वि तुह माहप्पं वण्णेदुं ।
(देवि, न पारयति सत्यं चतुराननोऽपि तव माहात्म्यं वर्णयितुम्)

(नेपथ्ये)

उवट्ठिदा खु देवदाराहणवेला देवईए । संपण्णाइ देवदाराहणोवकरणाइ । (उपस्थिता खलु देवताराधनवेला देवक्याः । सम्पन्नानि देवताराधनोपकरणानि ।)

(सर्वा आकर्णयन्ति)

निपुणिका—भट्टिणि, देवदाराहणत्थं सद्दावेदि कुलवुड्ढाओ ।
(भट्टिनि, देवताराधनार्थं शब्दापयन्ति कुलवृद्धाः ।)

देवकी—भद्दे, खणमत्तं उपविस । देवदाराहणं णिवत्तिअ आअच्छामि । णिउणिए, तुमं वि विस्सवेअणीए दुदीआ होहि । (इति गर्भभरालसा मन्दं मन्दं निष्क्रान्ता) (भद्रे, क्षणमात्रमुपविश । देवताराधनं निवर्तयित्वा आगच्छामि । निपुणिके, त्वमपि विश्ववेदिन्या द्वितीया भव ।)

निपुणिका—(समन्तादवलोक्य) अच्चलिअं अच्चलिअं (आश्चर्य-
माश्चर्यम् ।)

कप्पपाअवविअप्पतोरणं दिव्वअंसुअविदाणसोभिदं ।
पारिआअकुसुमोपहारअं दिप्पदिव्वमणिदीविआसअं ॥२४॥

[कल्पपादपविकल्पतोरणं दिव्यांशुकवितानशोभितम् ।
पारिजातकुसुमोपहारकं दीप्तदिव्यमणिदीपिकाशतम् ॥२४॥]

किञ्च

संगीअरसतरंगिअं अब्भुद आणंद उसव्वं महग्घं ।
पुण्णसुइघोसमुहलं वेउट्ठं विअ भाइ अम्ह घरं ॥२५॥

[सङ्गीतरसतरङ्गितमद्भुतानन्दोत्सवं महार्घम् ।
पुण्यश्रुतिघोषमुखरं वैकुण्ठमिव भात्यस्माकं गृहम् ॥२५॥]

विश्ववेदिनी—(विभाव्य) एसो क्खु ओअण्णस्स देवदेवस्स
हरिणो वेभवविलासो । (एष खलूत्पन्नस्य देवदेवस्य
हरेर्वैभवविलासः ।)

(उभे हर्षमभिनयतः)

(नेपथ्ये)

धन्यश्च जन्म युवयोः पितृत्वेन जगत्पितुः ।

विश्ववेदिनी—भअवदि, तुह पादवंदणप्पसादो एसो व सव्वं ।
(भगवति तव पादवन्दनप्रसाद एष एव सर्वम्)

(पुनर्नेपथ्ये)

भगवन्, भवदनुग्रहविशेष एष किं न सम्भाव्यते ?

(इति विश्ववेदिनी निपुणिका चोपसृत्य प्रणते भूत्वा)

निपुणिका—अहो अम्ह पुण्णपरिपाओ जं देअदेअं सव्वा पेक्खामो । अहो परिपुण्णमणोरहो लोओ । (साञ्जलिबन्धम्) देअदेअ णमो दे । (अहो अस्मत्पुण्यपरिपाको यद्देवदेवं सर्वाः प्रेक्षामः । अहो परिपूर्णमनोरथो लोकः । देवदेव नमस्ते ।)

विश्ववेदिनी—देई, वड्ढसि कुमालउब्भुअमहूसवेण (देवि, वर्धसे कुमारोद्भवमहोत्सवेन)

निपुणिका—(प्रणिपत्य) भट्टिणि, अणआ विस्सवेअणीए भासिदं क्खु होदि अभिमत्तत्थफलेण सच्चं । (भट्टिनि, अनया विश्ववेदिन्या भाषितं खलु भविष्यति अभिमतार्थफलेन सत्यम् ।)

देवकी—(सबहुमानम्) भद्दे विस्सवेइणि, तुह आसावणस्स पसादो एसो। (सप्रमोदं स्वाङ्गादाभरणान्युन्मुच्य) हंजे णिउणिए, विस्सवेइणीए एदेहिं भूसणेहिं भूसेहि। पट्टंसुअजुअलेन एदिणा परिधावेहि (भद्रे विश्ववेदिनि, तव आशावनस्य प्रसाद एषः। हञ्जे निपुणिके, विश्ववेदिनी-मेतैर्भूषणैर्भूषय। पट्टांशुकयुगलेनैतेन परिधापय।

(निपुणिका तथा करोति)

(सर्वे दिव्यमङ्गलवाद्यघोषं पुष्पवृष्टिं च दृष्ट्वा सानन्दं नृत्यन्ति।)

विश्ववेदिनी—(अञ्जलिं बद्ध्वा) देवई देई, किं वो भूएहिं पिअं उवहरेमि ? (देवकि, देवि, किं वो भूयः प्रियमुपहरामि ?

(नेपथ्ये)

जय जगत्पते देवकीनन्दन !

अद्य प्रसन्नं मम भागधेय—
मद्य प्रसन्ना ममता त्वदीया ।
अगम्यमक्ष्णां मनसां गिरां त्वां
यदद्य वीक्षे नयनैरमीभिः ॥२६॥

विश्ववेदिनी—(कर्णं दत्त्वा) अहो ओअएणं आदिपुरुसस्स अभिधाणं पिदामहेण किदं। (विलोक्य) एसा वसुदेवेण समं समग्गरयणगरुडसप्पपमुहा-दिसेविदा सपरिवाआ अंभोअसिंहासणं अधिचिट्ठइ देई। जा एसा

(अहो उपपन्नमादिपुरुषस्याभिधानं पितामहेन कृतम्। एषा वसुदेवेन समं समग्ररत्नगरुडसर्पप्रमुखा-दिसेविता सपरिवारा अम्भोजसिंहासनमधितिष्ठति देवी। यैषा)

मंगल्लण्हाणसुद्धा परिणदविमलक्खामअंके कुमालं
दिव्वं तं धारअंती विलसइ सइणो आकिदी लंछणं व।
वेदी जण्णप्पसूदा विअ हुदवहणं भासुरं भंखणं व
त्तेल्लोक्कग्घं मणींदुं दिणअरउदिअं पुण्णआसण्णपुप्फा ॥२७॥

[मङ्गल्यस्नानशुद्धा परिणतविमलक्षामाङ्के कुमारं
दिव्यं तं धारयन्ती विलसति शशिन आकृतिर्लाञ्छनं वा।
वेदी यज्ञप्रसूताइव हुतवहनं भासुरं भक्षणं वा
त्रैलोक्यार्घ्यं मणीन्द्रं दिनकरमुदितं पूर्णिमासन्नपुष्पा ॥२७॥]

(ततः प्रविशति यथोद्दिष्टा सपरिवारा देवी)

देवकी—जाद पिऊणो दंसणं देहि।
(जात पितुर्दर्शनं देहि ।)

(इति वसुदेवहस्ते कुमारमर्पयति)

वसुदेवः—(कुमारं हृदयेन धारयन्)

अङ्गमङ्गममृतोपमेन मे
स्पर्शनेन सुखयस्व पुत्रक !
अङ्गकैरमृतवृष्टिशीतलै—
रेधि तापहरणाभिलापुकैः ॥२८॥

पितामहः—भद्र वसुदेव, भद्रे देवकि !
वन्दनीयपदौ नित्यं युवां त्रैलोक्यवर्तिभिः ॥२९॥

देवकी—अअमेव परमो मोदो। (अयमेव परमो मोदः।)

पितामहः—भद्र वसुदेव, भद्रे देवकि, किं वो भूयः प्रियमुप·
करोमि ।

उभौ—भगवन्, किमतः परं प्रियम्, तथापीदमस्तु।

(भरतवाक्यम्)

राजा जीयान्नयविभवतः प्राणिरक्तः प्रवृत्तौ
विद्यावेदानुमतगतयः सन्तु यज्ञैरुपेताः ।
काले वृष्टिर्भवतु महती लोकमुज्जीवयन्ती
भक्तिर्भूयाद्भगवति मम श्रीपतौ वासुदेवे ॥३०॥

(निष्क्रान्ताः सर्वे)

(इति श्रीलोकनाथभट्टप्रणीतं कृष्णाभ्युदयं प्रेक्षणकं सम्पूर्णम् ॥)

हिन्दी अनुवाद

(नान्दी)

अन्वयः—या कापि स्तन्यरसं प्रदातुम् उचितां गोपाङ्गनाभूमिकां प्राप्ता, स्तनरसैः सह कृष्ण, त्वं तदसून् आपीतवान्। इह त्वाम् अन्या कथं विश्वसेत् इति व्याहारिणीं मातरं वीक्षन स्मेरमुखेन्दुः अङ्कशयितः मायाशिशुः नः पातु॥

वृत्त—शार्दूलविक्रीडित।

हिन्दी—तुझे दूध पिलाने के लिए जिस नारी ने गोपांगना की वेषभूषा धारण की, कृष्ण, तूने दुग्धपान के साथ उसके प्राण भी पीलिए। अन्य कौन नारी तुझ पर विश्वास करेगी? ऐसे कहती हुई माँ को देखते हुए शिशुरूप श्रीकृष्ण हमारी रक्षा करें। [१]

और भी

अन्वयः—अवधिविरहितं ब्रह्मस्तम्बं निजात्मनि बिभ्रत् आनन्द-सान्द्रं विश्वातिलङ्घि यत् तेजः तच्छ्रुतीनाम् अपि गतिविषयं न एति, महितजनपरित्राणहेतोः धृतदयं मायया मानुष्यम् अवाप्तं ततः तेजः देवक्याः भागधेयं नः शाश्वती सम्पद (च) दिशतु।

वृत्त — स्रग्धरा ।

हिन्दी — असीम ब्रह्माण्ड को अपनी आत्मा में धारण किए हुए आनन्दघन विश्वव्यापक जो तेज वेदोक्तियों के वर्णन का भी विषय नहीं, पुण्यशील मनुष्यों की रक्षा के लिए मायारूपी मानव रूप को प्राप्त वह तेज सदैव देवकी के भाग्य को बढ़ाए और हमें निरन्तर सम्पत्ति दे ॥ [२]

(नान्दी के उपरान्त सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार—(पर्दे की ओर देखकर) आर्या, इधर आइए ।

नटी—(प्रवेश करके) आर्य, आज्ञा दीजिए ।

सूत्रधार—आज हमारे लिए शुभ दिन है क्योंकि काञ्ची के अधिपति श्रीहस्तिगिरिनाथ के वार्षिक ब्रह्मोत्सव पर एकत्रित सभासदों ने मुझे आदेश दिया है कि "ब्राह्मण-नट-शिरोमणि आप किसी अपूर्व वस्तु निबद्ध उपरूपक के द्वारा हमारी सभा को कृतार्थ करें।"

नटी—वह कौन सा रोमाञ्चकारी उपरूपक है जिससे हम शिक्षित समाज को प्रसन्न करें ?

सूत्रधार —(स्मृति का अनुभव करता हुआ) आर्या, क्या तुम नहीं जानती कि कविशेखर बिरुद से प्रख्यात वरदार्य

के पुत्र लोकनाथभट्ट ने कृष्णाभ्युदय नामक प्रेक्षणक की रचना की है ? हमने उसके अभिनय का बारंबार अभ्यास किया है। उसी से हम इस सभा को प्रसन्न करेंगे। अब वर्षा ऋतु का एक गीत गाइए।

अन्वयः—धारालैः धृतशक्रचापरुचिरैः उन्नादिभिः महीं सलिलात्मिकाम् इव कुर्वद्भिः वारिदैः आपगाः कूलङ्कषाः। नूनं फुल्लनीपशिलीध्रकेतकरजः जगत् जिगीषोः प्रसूनधनुषः सेनाधूलिः इव दिग्व्यापकं (सत्) जृम्भते ॥

वृत्त—शार्दूलविक्रीडित

हिन्दी—धारावर्षी, इन्द्रधनुष के धारण से सुन्दर, गर्जते हुए, पृथ्वी को मानो जलमयी करते हुए मेघों से नदियाँ किनारों तक भर गई हैं। निस्सन्देह खिले हुए नीप, शिलीन्ध्र और केतकी के पुष्पों का पराग, जो कि मानो जगत् जीतने के इच्छुक पुष्पधनुर्धारी कामदेव की सेना की पादधूलि है, चारों दिशाओं में फैल रहा है। [३]

नटी—(गाती है)

अन्वयः—घनरवप्रमुदिता शिखिनी गुरुगर्भभारखिन्नां समधिकनिस्सत्त्वमन्थरां चोलिं दृष्ट्वा केशान् धुनोति।

वृत्त—आर्या।

हिन्दी—मेघगर्जन से प्रसन्न मोरनी प्रवृद्ध गर्भभार से खिन्न, अतिदुर्बल मन्द कटि को देखकर अपने केशों को हिला रही है। [४]

सूत्रधार—अहा ! कैसा मधुर राग है ! (ध्यान देकर) यह गाथा प्रस्तुत रूपक की वस्तु को सूचित करती है। यह हमारी सखी नृत्तदीपिका दिव्यादेशिनी विश्ववेदिनी की वेषभूषा रचकर, देवी देवकी को शुभ लक्षण बतलाकर धैर्य बंधाने के लिए, मथुरागामी राजमार्ग पर घर-घर में घूमती हुई, वसुदेव के घर की ओर इधर ही चली आ रही है। जो यह

अन्वयः—धम्मिल्लाहितमल्लिका मौक्तिकैः गुञ्जाफलैः व्यतिकृतं हारं बिभ्राणा माहिषदन्तपत्ररुचिरा ताम्बूलगर्भानना मदरज्यमाननयना संव्यानरुद्धस्तनी लीलाकुञ्चित-वामकूर्परधृतां पेटीं मुदा वहन्ती (अस्ति)।

वृत्त—शार्दूलविक्रीडित ।

हिन्दी—सिर के बालों पर मालती के सुगन्धित पुष्प धारण किए हुए, मोती और लाल गुञ्जाफलों से पिरोए हुए हार को पहने हुए, मैसूर नगर के बने हुए कर्णभूषणों से शोभायमान मुख में पान रखे हुए, स्तनों को दुपट्टे

से आवृत किए हुए, सविलास संकुचित बाँए कंधे पर सानन्द पिटारी को उठाए हुए है ॥ [५]

[दोनों चले जाते हैं]

प्रस्तावना

(पूर्वसंकेतित विश्ववेदिनी का प्रवेश)

विश्ववेदिनी—(हर्ष से, चारों ओर देखकर)

अहो ! समस्त समृद्ध वस्तुओं से परिपूर्ण यह मथुरा प्रसन्न पुरवासिओं से सुन्दर दिख रही है। (पेटी को देखकर) यहाँ घर-घर में स्त्रियों के मंगलमय सौभाग्य लक्षणों को दिखाते-दिखाते मेरी पिटारी चाँवल, दीनार, मोतियों से भर गई हैं। (सामने देखकर) यह तो महात्मा वसुदेव का घर है। यही तो है। मैं भीतर जाऊँ।

(भीतर जाकर, बाईं आँख का स्पन्दन सूचित करके)

अन्वयः—अद्य मे वामविलोचनपिशुनस्फुरत् कुशलम्।

हिन्दी—बाईं आँख के फड़कने से प्रतीत होता है कि आज मुझे लाभ होगा।

(सोचकर) यहाँ विशेष लाभ होना चाहिए।

अन्वयः—देवक्याः तनयदर्शनतः अपरम् अधिकं फलं किमु

खलु।

वृत्त—आर्या

हिन्दी—देवकी के पुत्रदर्शन से और अधिक लाभ क्या हो सकता है। [६]

(विचारकर) राजकुल में उचित अवसर पर ही प्रवेश करना चाहिए। यहाँ बहिर्द्वार के स्तम्भ पर आप्त जन द्वारा लिखे हुए राजकुल समाचार को जानकर भीतर प्रवेश करूँ।
(प्रवेश करती है)

(पर्दे के भीतर से)

स्वामिनी, इधर आइए, इधर आइए।

विश्ववेदिनी—(सुनकर और देखकर) गर्भभार से श्रान्त देवी देवकी सेविका का अवलम्ब लेकर इधर ही आ रही हैं। जो यह—

अन्वयः—अद्य नियमक्षीणक्षीणैः अङ्गैः अतुलसौभाग्यं धारयन्ती (या एषा) त्रिभुवनजीवातु अमृतरसं धारयन्ती इन्दुलेखा इव (दृश्यते) ॥

वृत्त—आर्या।

हिन्दी—व्रतोपवास से अत्यन्त कृश हुए अंगों से अतुल सौन्दर्य को धारण करती हुई देवकी, त्रिभुवन संजीवक अमृतरस को धारण करती हुई चन्द्रलेखा के समान, आज दिख रही है ॥ [७]

(पूर्वसंकेतित देवकी का प्रवेश)

देवकी—निपुणिका ! उस योगीश्वर का वचन सत्य होगा क्या ?

निपुणिका – स्वामिनी ! योगीश्वर का वचन मिथ्या नहीं होता।

देवकी—आर्यपुत्र के भाग्य सफल होंगे क्या ? पूज्य ब्राह्मणों के आशीर्वाद सत्य होंगे क्या ? अथवा इन मनोरथों से क्या लाभ ? मैं तो वही अभागिनी देवकी हूँ।

निपुणिका—स्वामिनी, शोक मत कीजिए। ऐसे महात्माओं का कथन है कि समस्त संसार में प्रख्यात यशस्वी पुत्र को देवकी जन्म देगी। अथवा ये तुम्हारे शुभ लक्षण क्या मिथ्या हैं ?

देवकी—सखी ! वैसे फल का भी अनुभव हो रहा है।

निपुणिका—स्वामिनी ! आप खिन्न मत होइए। भाग्यवश परिणाम सब शुभ होगा। (विचार करके) आज एक विश्ववेदिनी नाम की दैवज्ञा को घर-घर में धीरे-धीरे चलते हुए देखा है—ऐसा मधुकरिका ने कहा है। यदि वह यहाँ आ जाए

देवकी—तो फिर क्या होगा ?

निपुणिका—तब सब यथार्थ प्रकट होगा।

विश्ववेदिनी—प्रवेश का यह उत्तम समय है (प्रवेश करके) ऐ ! सुनिए—

अन्वयः—जन्तूनां भालदेशे विधिपरिलिखितं सर्वम् एव अहं जाने । देवलोके सरसिजभुवने किं च पातालज्ञोके यत् वृत्तं (तत्) सर्वम् अहं जाने । देव्याः कालिकायाः (प्रसादात्) गर्भगर्भे विनिहितम् अखिलं निधानं भगिन्यै दर्शयितुम्—

वृत्त—स्रग्धरा

हिन्दी—मनुष्यों के ललाट पर विधि ने जो कुछ लिखा है वह सब मैं जानती हूँ। देवलोक, ब्रह्मलोक और पाताल-लोक में जो कुछ हो रहा है वह भी मैं जानती हूँ। दैव ने गर्भ के भीतर जो कुछ गुप्त रखा है, देवी काली के प्रसाद से उस सब को दिखाने की मुझ में शक्ति है। [८]

(देवकी और निपुणिका विश्ववेदिनी को देखकर चकित हो जाती हैं)

विश्ववेदिनी—(स्मितपूर्वक) आप को उत्तरोत्तर महान् लाभ होने वाला है। (हाथ जोड़कर) तुम्हारे (गर्भस्थ) आर्य के प्रति मेरा नमस्कार हो।

अन्वयः—पर्वनिशा शशाङ्कलेश्याम् इव या (त्वं) परमार्थं परमहंसं यं साक्षाद् गर्भे वहसि तम् अहं वन्दे ।

वृत्त—आर्या ।

हिन्दी—जैसे पूर्णिमा की रात्रि चन्द्रलेखा को वैसे आप परमतत्त्व परमहंस भगवान को साक्षात् गर्भ में धारण कर रही हो, मैं उन्हें प्रणाम करती हूँ ॥ [९]

देवकी—आपका स्वागत है। आप यहाँ बैठिए (आसन देती है)

विश्ववेदिनी—आप भी आसन पर बैठिए (देवकी बैठ जाती है)

विश्ववेदिनी—(बैठकर, देवकी का मुँह देखकर) आपका मुख म्लान कमल के समान कैसे ?

(देवकी हँसकर निपुणिका की ओर देखती है)

निपुणिका—आर्या ! देवी के विषाद का कारण क्या आपसे भी छिपा है ? कब शान्ति मिलेगी ?

विश्ववेदिनी—आर्या, भगवती काली के प्रति उपहार दीजिए।

(निपुणिका कपूर, सुपारी के खंडों सहित पान देती है)

विश्ववेदिनी—(लेकर) भगवती काली को नमस्कार हो।

(देवी को देखकर)

अन्वयः—देव्या अङ्गे अङ्गे महाफलानि सुलक्षणानि दृश्यन्ते। (देवी के अंग अंग में महाफलदायक उत्तम लक्षण दिखते हैं)

निपुणिका—इसका क्या फल होगा ?

अन्वयः—विश्ववेदिनी—अतः एषा शच्या अपि काङ्क्षणीय पदम् अनुभवितुम् अत्र योग्या (अस्ति)

वृत्त—उपजाति ।

हिन्दी—विश्ववेदिनी—अतः यह इन्द्राणी से कांक्षित पद को भी प्राप्त करने योग्य है । [१०]

देवकी—इन लक्षणों का फल यह अवस्था है क्या ?

विश्ववेदिनी—(पिटारी से स्वर्णशलाका को लेकर, पुष्प अक्षत आदि से उसकी पूजा करके, हाथ जोड़ करके).

अन्वयः—आर्यायाः भगवत्या अस्खलितायाः सत्यमय्याः सिद्धि-शलाके ! मे इदम् अभिमतं सत्यम् अर्थं दर्शय ।

वृत्त—आर्या

हिन्दी—भगवती, अमोघवाक् सत्यमयी आर्या कालिका की सिद्धिशलाके ! तुम मुझे इष्ट सत्य अर्थ प्रकट करो । [११]

अन्वयः—इह कमलम् इह कुलिशम् इह कलशः, अत्र भागधेय-गतम् ।

हिन्दी—यहाँ कमल, यहाँ वज्र, यहाँ कलश और यहाँ भाग्य रेखाएँ हैं ।

(शलाका से दिखाती है)

निपुणिका—तब क्या ?

अन्वयः—तदस्याः चरणं सामन्तवधूसीमन्तानां विभूषणम् ।

वृत्त—आर्या

हिन्दी—विश्ववेदिनी—राजबधुओं में इसकी चरण रेखाएँ सुन्दर हैं। [१२]

(पाँव को देखकर)

अहो ! कैसा सुन्दर है इसका सौभाग्य ?

अन्वयः—यावकरसानुरागः मलिनीकरणम् इति मम खलु परिहासः। नूनम् अनन्तेदृशकुट्टिमरञ्जनाय उज्ज्वलति ॥

वृत्त—आर्या

हिन्दी—(पांव पर लगे हुए) अलक्तक का लाल वर्ण मलिनता का कारण हो इस पर मुझे हँसी आ रही है। निश्चित ही यह इस प्रकार के कई फर्शों को लाल बनाने के लिए चमक रहा है। [१३]

निपुणिका—इसका परिणाम ?

विश्ववेदिनी—इससे स्पष्ट है कि आपको पति से दुख नहीं है।

(पुनः देवकी के हृदय पर सलाई को रखकर सादर)

अन्वयः—तव चिरविरहिणः दयितस्य च एकैकं प्रेमबन्धनम्, एकैकं समरसम् अदृष्टभेदं हृदयम्। विधानम् आश्चर्यम्

वृत्त—आर्या

हिन्दी—तुम्हारा और तुम्हारे चिरविरही प्रिय का प्रेमबन्धन अटूट है। तुम दोनों के हृदय भी समरस और अभिन्न हैं। अद्भुत है यह विधान! [१४]

निपुणिका—आर्या, ठीक कहा आपने ? (शोक सहित स्मित से) अतएव विरह-शोक को देवी नहीं मानतीं।

अन्वयः—मदकलकलकण्ठी मञ्जुलारावरम्या उदाराः अक्षरोक्तीः अमृतम् इव सृजन्ती स्मितपूर्वप्रवृत्तं कण्ठम् आलापयन्ती गिरा किं सपत्नीनां चित्तं न विवशयति ?

वृत्त—मालिनी

हिन्दी—मदवश अव्यक्त मधुर बोल वाली, मधुर स्वर से रमणीय अमृत सदृश उदार वर्णध्वनि को उच्चारित करती हुई, सस्मित वर्णध्वनि से अपनी सपत्नियों के हृदय को क्या मुग्ध नहीं कर लेती है॥ [१५]

अतएव इनकी सपत्नियाँ भी इनके साथ प्रियसखी जैसा व्यवहार करती हैं।

विश्ववेदिनी—निपुणिका, देखो !

अन्वयः—विकसितकमलपलाशच्छायात्मकान्तिसौभाग्या स्नेह-शीतलकटाक्षिता (अस्याः) श्रीनिभा दृष्टिः जयति ।

वृत्त—आर्या ।

हिन्दी—खिले हुए कमलपत्र की शोभा के समान रमणीय, करुणा एवं स्नेह से शीतल कटाक्ष से युक्त देवी की दृष्टि लक्ष्मी के समान अति सुन्दर है ॥ [१६]

(देवकी मौन रहती है)

विश्ववेदिनी—(मन में) इतने से देवी सन्तुष्ट नहीं दिखतीं । अतः सार युक्त बात कहती हूँ । (सामने शलाका को देखकर) भद्रे सिद्धिशलाके ! तत्त्व की बात कहो ।

अन्वयः—पयोधरयोः लावण्यकारामनवप्रवालं त्रैलोक्यसञ्जीवन-साधनाङ्कं सरसीरुहसोपमानं पाणिं प्रसार्य ।

वृत्त—उपजाति ।

हिन्दी—स्तन के सौन्दर्यरूपी उपवन का नूतन प्रवाल, तीनों लोकों के जीवन साधन के चिन्ह कमलसदृश अपने बाएँ हाथ को फैलाओ । [१७]

(देवकी अपने अलस और शिथिल हाथ को फैलाती है)

विश्ववेदिनी—(देखकर, सादर)

अन्वयः—चूतप्रवालसरसीरुहविद्रुमेषु कुन्दशिरीषकुसुमेषु कुमार-
भावः। देव्याः हस्तकमलेक्षणे सत्कान्तिरूपसुकुमार-
गुणस्य रीतिं किमपि एतत्।

वृत्त—उपजाति।

हिन्दी—देवी के हस्तकमल में आम्रप्रवाल, कमल, मुक्ता, कुन्द
और शिरीष के पुष्पों की कोमलता है। सत्कान्ति, रूप
और सुकुमारता गुणों के सदृश यह कुछ है। [१८]

निपुणिका—आर्या, ठीक-ठीक देखिए

विश्ववेदिनी—आर्या कुलदेवता काली, प्रणाम। इनके सौन्दर्य
का वर्णन अब नहीं करती। इनकी सन्तति के
विषय में बतलाती हूँ।

देवकी—(एक ओर होकर) सखी, यह तो मेरे मन की बात
कह रही है।

निपुणिका—स्वामिनी, यह तो विश्वविज्ञा है (सामने होकर)
आर्या, ठीक-ठीक बतलाना।

विश्ववेदिनी—ये सन्तति की रेखाएँ हैं। (क्रमशः छः रेखाओं
को दिखाकर, विचार करके) ये रेखाएँ अच्छी

नहीं हैं (लज्जा से हाथ को ढककर और दृष्टि को हटाकर)

अमंगल का नाश हो, अमंगल का नाश हो, पाप शांत हो, पाप शान्त हो। (पुनः विचार करके) दैव ने अतीत घटनाओं के माध्यम से विश्व के अनुकूल ही किया है।

(पुनः सलाई से सातवीं सन्तति रेखा की ओर इंगित करके चिरकाल तक चिन्तन करती है)

निपुणिका—आर्या, क्या जाना ?

विश्ववेदिनी—देवी की कृपा से सब कुछ जान लिया है।

निपुणिका—कैसे ?

विश्ववेदिनी—गगन स्थित चन्द्रमा की भाँति अपूर्ण ही देवी के गर्भ से निकलकर यह चेतनाकार कुछ स्थायी रूप में स्थित है।

देवकी—निपुणिका ! यह भी निश्चित कन्या जैसी ही है।

विश्ववेदिनी—(पुनः आठवीं रेखा को सलाई से इंगित करके सानन्द)

अहो देवी अत्यन्त भाग्यशालिनी है।

अन्वयः—विश्वम्भराभारहरः धुरीणः विश्वातिगः विश्वविधान-दक्षः आकल्पमव्याहतपुण्यकान्तिः अथ वासरस्य दीप्तार्कज्योतिः

वृत्त—उपजातिः।

हिन्दी—(यह बालक) पृथ्वी के भार का संहारक, भूभार का वाहक, सर्वातिशायी और सर्वविधान निपुण है। इसका पुण्य यश कल्पपर्यन्त स्थायी रहेगा। यह दिवस का जाज्वल्यमान सूर्यप्रकाश है। [१६]

अन्वयः—यस्य प्रभावः दनुसुतहृदयेषु ज्वलति, अधुना दिशापतीनां मौलिषु विलसति, अखिलं त्रिभुवनं यस्य वशे भविता।

वृत्त—आर्या।

हिन्दी—जिसका प्रभाव दानवों के हृदय में प्रज्वलित होता है और अब दिग्पालों के मस्तकों पर शोभित हो रहा है। सम्पूर्ण तीनों भुवन जिसके वश में होंगे॥ [२०]
जिसके वैभव का ब्रह्मा भी वर्णन नहीं कर सकते—ऐसे कुमार को आप जन्म दोगी।

निपुणिका—आपकी प्रसन्नता से मैं मानों सामने ही कुमार को देख रही हूँ।

देवकी—(स्मितपूर्वक) भद्रे ! पुत्रमुखरूपी शीतल एवं पवित्र नदी जल का पान करना चाहती हूँ। मेरे लिए तुम्हारे वचन मृगतृष्णा की शान्ति के लिए पेय जल और प्राण हैं।

विश्ववेदिनी—ऐसा मत कहो—यह तो सच्ची घटना होने जा रही है। तुम्हारे गर्भ की सब अतीत घटनाओं को मृगतृष्णा कह देना उचित नहीं है। सुनिए—देव, असुर, सिद्ध, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस आदियों से सम्मानित नवजात महापुरुषों के भावी सफल व असफल चरित्र का मेरे द्वारा किया गया वर्णन कभी असत्य नहीं होता। मेरे संपूर्ण कथन को आप सही मानिए।

देवकी—भद्रे ! मैं आपके वचन को सही मानती यदि वह मेरी संतान के प्रति पापशील कंस न होता।

विश्ववेदिनी—शत्रुपक्ष में स्थित उस दुर्जन से आप न डरें। उसे अपने बन्धुजनों की भी चिन्ता नहीं, देवी देवकी नारी हैं उसे इस बात की क्या चिन्ता ? त्रैलोक्य पालन-समर्थ उस महापुरुष श्रीकृष्ण के सामने कंस आदि दानव वर्ग की क्या शक्ति ?

देवकी—व्याकुल मोरनी को मेघगर्जित जैसे; आपका कथन मेरे लिए आश्वासनमात्र होगा।

विश्ववेदिनी—देवी, सर्वथा आर्या काली के प्रसादस्वरूप प्राप्त मेरे वचन को आप सत्य मानिए। (देखकर सिर हिलाकर) इस दुष्ट कंस का अन्यायाचरण आपके विषाद का कारण है और आपको प्रसव वेदना इस आगामी मुहूर्त में ही होने जा रही है।

देवकी—भद्रे, दिनों की गणना से समय निकट आप पहुँचा है

विश्ववेदिनी—(पुनः देवकी को देखकर) देवी की गर्भेच्छा और कांक्षित विलासों के विषय में अब मैं कहती हूँ।

निपुणिका—कैसे ?

विश्ववेदिनी—आपकी इच्छा है कि

अन्वयः—पुण्ये वृन्दावने भद्राणि पुष्पाणि (जिघ्रती) लीलया पर्यटन्ती च गोकुलमध्ये अहं वसेयम्।

वृत्त—आर्या।

हिन्दी—पवित्र वृन्दावन में सुन्दर पुष्पों को (सूँघती हुई) सुग्गों और हंसों के साथ खेलती हुई गोकुल में रहूँ।
॥२१॥

अन्वयः—रम्या तनुसुमालामङ्गलवलयं नवं सोढुं या न अलम्, (सा) एषा महती भुजलता गोवर्धनशैलं धारयितुं (कांक्षति)

वृत्त—आर्या।

हिन्दी—रमणीय, सुहावनी नन्हीं पुष्पमाला के बने मंगल वलय को भी पहनने में असमर्थ यह तुम्हारी लम्बी भुजा गोवर्धन पर्वत को उठाना चाहती है ॥ [२२]

और

अन्वयः—मणिमयसिंहासने भुजगपतिभोगकम् इव आसीना वातुलैः जयमङ्गलैः स्वप्ने हिण्डामि ।

वृत्त—आर्या ।

हिन्दी—मणिमय सिंहासन पर, मानों कि वह शेषनाग का फण हो, बैठी हुई मैं वाद्यों के साथ गाए जा रहे मंगल गीतों से स्वप्न में चलूँ । [२३]

देवी देवकी, ठीक ब्रह्मा भी आपके महत्व का वर्णन नहीं कर सकता ।

(पर्दे के भीतर से)

आपके देवता-आराधन का समय आ गया है । देव-पूजा की सामग्री तैयार है ।

(सब सुनते हैं)

निपुणिका—स्वामिनी ! देव पूजार्थ कुल वृद्धाएँ आपको बुला रही हैं ।

देवकी—भद्रे, कुछ समय तक यहाँ बैठिए। देवपूजा समाप्त करके मैं आती हूँ। निपुणिका, तू विश्ववेदिनी के साथ रहो।

(गर्भभार से श्रान्त देवकी मन्द मन्द चली जाती है)

निपुणिका—(चारों ओर देखकर) आश्चर्य है आश्चर्य है।

अन्वयः—(अस्माकं गृहं) कल्पपादपविकल्पतोरणं दिव्यांशुक-वितानशोभितं पारिजातकुसुमोपहारकं दीप्तदिव्यमणि-दीपिकाशतम्।

वृत्त—आर्या।

हिन्दी—हमारा घर दिव्य वस्त्रों के वितान से सुशोभित है, परिजात पुष्पों के उपहार से सम्पन्न एवं सैकड़ों दिव्य मणिदीपों से देदीप्यमान हो रहा है। घर के बहिर्द्वार में कल्पवृक्ष उगा लगता है। [२४]

और

अन्वयः—संगीतरसतरङ्गितम् अद्भुतानन्दोत्सवं महार्घं पुण्य-श्रुतिघोषमुखरम् अस्माकं गृहं वैकुण्ठम् इव भाति॥

वृत्त—आर्या।

हिन्दी—संगीत ध्वनि से ध्वनित, अद्भुत आनन्दोत्सव से उल्लासित यह हमारा घर पवित्र वेदध्वनि से शब्दाय-मान होकर बैकुंठ सदृश प्रतीत हो रहा है। [२५]

विश्ववेदिनी—(देखकर) निश्चित ही जगद्वतीर्ण देवदेव भगवान विष्णु का यह वैभव-विलास है।

(दोनों हर्ष का अभिनय करती हैं)

(पर्दे के भीतर से)

जगत्पिता भगवान् के पिता होने के कारण आप दोनों का जन्म धन्य है।

विश्ववेदिनी—भगवती ! आपके चरण वन्दन का यह प्रसाद है।

(फिर पर्दे के भीतर से)

भगवन् ! यह आपका विशेष अनुग्रह ही क्यों न मान लिया जाए।

(विश्ववेदिनी और निपुणिका समीप आकर प्रणाम करती हैं)

निपुणिका—अहो ! यह हमारे पुण्यों का फल है जो हम सब देवदेव को देख रही हैं। अहो जनमनोरथ पूर्ण हो गया। (हाथ जोड़कर) देवदेव ! आपको प्रणाम।

विश्ववेदिनी—देवी ! कुमार के जन्ममहोत्सव की आपको बधाई हो।

निपुणिका—(प्रणाम करके) स्वामिनी ! विश्ववेदिनी का कथन निश्चित ही अभिमत वस्तु को लाकर सिद्ध होगा।

देवकी--(सादर) भद्रे विश्ववेदिनी ! आपके आशारूपी वृक्ष
का यह फल है।

(सहर्ष अपने अंगों से आभूषणों को उतारकर)

सखी निपुणिका ! इन आभूषणों से विश्ववेदिनी को
अलंकृत करो। ये दोनों रेशमी दुपट्टे इन्हें पहिनाओ।

(निपुणिका वैसा ही करती है। दिव्य मंगलमय वाद्यध्वनि को सुनकर
और पुष्पवृष्टि को देखकर सब नाचते हैं)

विश्ववेदिनी--(हाथ जोड़कर) देवी देवकी, मैं आपका क्या
प्रिय करूँ ?

(पर्दे के भीतर से)

विश्वस्वामिन् आपकी जय हो !

अन्वयः--अद्य मम भागधेयं प्रसन्नम्। अद्य त्वदीया ममता
प्रसन्ना। यदद्य अक्ष्णां मनसां गिराम् अगम्यं त्वाम्
अमीभिः नयनैः वीक्षे।

वृत्त--उपजाति।

हिन्दी--आज मेरे भाग्य का उदय हुआ है, आज आपकी
ममता जागृत हुई है, जो कि मैं आज मन, वाणी और
नेत्रों से अगम्य आपको इन आँखों से देख रहा हूँ। [२६]

विश्ववेदिनी——(सुनकर) अहो ! आदिपुरुष का नाम पितामह ने दिया है । (देखकर) समस्त रत्नों से सुशोभित एवं गरुड, शेषनाग आदि से सेवित सपरिवार देवी वसुदेव के साथ कमल-सिंहासन पर बैठो है ।

जो यह

अन्वयः——मङ्गल्यस्नानशुद्धा परिणतविमलक्षामाङ्के दिव्यं तं कुमारं धारयन्ती शशिनः आकृतिः लाञ्छनं वा विलसति । भासुरं भक्षणं वा यज्ञप्रसूतं हुतवहनं धारयन्ती वेदी इव, त्रैलोक्यार्घ्यं मणीन्दुम् उदितं दिनकरं धारयन्ती आसन्नपुष्पा पूर्णिमा इव विलसति ॥

वृत्त——स्रग्धरा ।

हिन्दी——पवित्र स्नान से शुद्ध होकर अपनी शिथिल, विमल, कृश गोद में दिव्य शिशु को धारण करती हुई सकलंक चन्द्रमा की भाँति सुशोभित हो रही हैं, जैसे भास्वर और भक्षक अग्नि को धारण करती हुई यज्ञ की वेदी हो अथवा जैसे त्रैलोक्यपूजनीय रत्नश्रेष्ठ, नवोदित सूर्य के सदृश शोभायमान चन्द्रमा को धारण करती हुई पुष्य नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा रात्रि हो । [२७]

(पूर्वसंकेतित सपरिवार देवकी का प्रवेश)

देवकी——पुत्र ! पिता को दर्शन दो ।

(वसुदेव के हाथ में कुमार को देती है)

वसुदेव—(कुमार को हृदय से लगाते हुए)

अन्वयः—पुत्रक ! अमृतोपमेन स्पर्शनेन मे अङ्गम् अङ्गं सुखयस्व । अमृतवृष्टिशीतलैः तापहरणाभिलाषुकैः अङ्कैः एधि ।

वृत्त—उपजाति ।

हिन्दी—पुत्र ! अमृततुल्य स्पर्श से तुम मेरे अंग को सुखी करो । तुम्हारे कोमल अंग अमृत वृष्टि के तुल्य शीतल हों और मेरे सन्ताप का हरण करें । [२८]

पितामह—भद्र वसुदेव ! भद्रे देवकी !

अन्वयः—युवां त्रैलोक्यवर्तिभिः नित्यं वन्दनीयपदौ ।

वृत्त—अनुष्टुप् ।

हिन्दी—त्रैलोक्यवासी जन आप दोनों की सदा चरणवन्दना करें ॥ [२९]

देवकी—यह अत्यन्त हर्ष की बात है ।

पितामह—भद्र वसुदेव, भद्रे जानकी, मैं आपका अन्य प्रिय क्या करूँ ?

दोनों—भगवन् ! इससे अधिक और क्या प्रिय हो सकता है ? तो भी यह हो ।

(भरतवाक्य)

अन्वयः——प्रवृत्तौ प्राणिरक्तः राजा नयविभवतः जीयात् । विद्यावेदानुमतगतयः यज्ञैः उपेताः सन्तु । लोकम् उज्जीवयन्ती महती वृष्टिः काले भवतु । भगवति श्रीपतौ वासुदेवे मम भक्तिः भूयात् ।

वृत्त——मन्दाक्रान्ता ।

हिन्दी——नीति और वैभव से युक्त नृपति राज्य कार्यों में प्रजा के अनुकूल रहे। वेद-शास्त्रों के अनुसार चलते हुए प्रजाजन यज्ञ करते रहें। प्रजा की जीवन-दात्री महती वृष्टि उचित समय पर हो। लक्ष्मीपति भगवान् वसुदेव के प्रति मेरी भक्ति स्थिर रहे। [३०]

(सब चले जाते हैं)

॥ कृष्णाभ्युदय प्रेक्षणक समाप्त ॥

प्रेक्षणकान्तर्गतपद्यानामकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमणिका

		पद्याङ्काः
१	अंगम्मि अंगम्मि	१०
२	अङ्गमङ्गममृतोपमेन मे	२८
३	अज्ज अउरसोहाग्गं	७
४	अज्जाए देवीए	११
५	अद्य प्रसन्नं	२६
६	इह कमलं इह कुलिशं	१२
७	एकक्कप्रेम०	१४
८	कप्पपाअवविअप्प०	२४
९	कापि स्तन्यरसं	१
१०	गरुगब्भभारखिण्णं	४
११	चूदप्पवालसरसीरुह०	१८
१२	जंतूणं भालदेसे	८
१३	जस्स पआवो दणु०	२०
१४	जावअरसाणुराओ	१३
१५	धन्यं च जन्म ··· त्रैलोक्यवर्तिभिः	२९
१६	धम्मिल्लाहृतमल्लिका	५
१७	धारालैर्धृतशक्रचाप०	३
१८	परमत्थं पवणिसा विअ	९
१९	पाणिं प्पसारेहि	१७
२०	ब्रह्मस्तम्बं निजा-त्मन्यवधि	२
२१	बिंदावणम्मि पुण्णे	२१
२२	भुअगपइहोअकं	२३
२३	मंगलण्हाणसुद्धा	२७
२४	मअकलकलकंठी	१५
२५	रम्मा तणुसुमाला	२२
२६	राजा जीयाभयविभवतः	३०
२७	वामविलोअण	६
२८	विअसिअकमलपलास	१६
२९	विसंभराभारहरो	१९
३०	संगीअरसतरंगिअं	२५

शब्दानुक्रमणिका

अ

अअं = अयम्
अउर = अतुल
अकति = (दे०) अनन्त
अक्क = अर्क
अक्खर = अक्षर
अक्खलिआए = अस्खलितायाः
अचलिअं = आश्चर्यम्
अच्चेरम् = आश्चर्यम्
अज्ज = अद्य
अज्जा = आर्या

अडंदी = अटन्ती
अणआ = अनया
अण्णाअ = अन्याय
अणुग्गहेण = अनुग्रहेण
अणुबंधं = अनुबन्धम्
अणुभूअदे = अनुभूयते
अणुराओ = अनुरागः
अणुहोदुं = अनुभवितुम्
अणंतरे = अनन्तरे
अत्त = आप्त
अत्तणो = आत्मनः
अत्थं = अर्थम्
अत्थि = अस्ति
अदिक्कंदेण = अतिक्रान्तेन
अदिचिट्ठइ = अधितिष्ठति
अदिट्ठ = अदृष्ट
अदु = अथ
अदो = अतः
अपरितोसो = अपरितोषः
अप्पणो = आत्मनः
अपुण्णं = अपूर्णम्
अब्भुद = अद्भुत
अभिधाणं = अभिधानम्
अभिप्पाअ = अभिप्राय
अभिप्पाअगदं = अभिप्रायगतम्
अभिमत्तत्थ = अभिमतार्थ
अमिअ = अमृत
अमिअरसं = अमृतरसम्
अम्मो = आश्चर्यम्
अम्ह = अस्मद्
अय्य = आर्य
अय्यउत्तस्स = आर्यपुत्रस्य
अय्ये = आर्ये
अरुहदि = आरोहति
अवगाहणं = अवगाहनम्
अवत्था = अवस्था
अवरं = अपरम्
अवलंबिअआणा = अवलम्ब्यमाना
अवि = अपि
अव्वाहद = अव्याहत
असच्चं = असत्यम्
असमीईणा = असमीचीना
असुरवग्गो = असुरवर्गः
असुल = असुर
अहग्गण = अहर्गण
अहवा = अथवा
अहिअं = अधिकम्
अहिमदेदं = अभिमतमिदम्
अहिलं = अखिलम्
अहुणा = अधुना
अंगम्मि = अङ्गे
अंगेहिं = अङ्गैः
अंबाए = अम्बायाः

अंभोअ = अम्भोज
अंसुअ = अंशुक

आ

आअच्छइ = आगच्छति
आअच्छंदी = आगच्छन्ती
आअच्छामि = आगच्छामि
आअच्छेद् = आगच्छेत्
आअरणं = आचरणम्
आअंद = आनन्द
आकप्प = आकल्प
आकिदी = आकृतिः
आणवेदु = आज्ञापयतु
आणंद = आनन्द
आद = पाद
आराहइमो = आराधयामः
आराहण = आराधन
आराहणत्थं = आराधनार्थम्
आलावअंती = आलापयन्ती
आसण्ण = आसन्न
आसासण = आश्वासन
आसावणस्स = आशावनस्य
आसोणा = आसीना
आसीवदा = आशीर्वादाः
आसंसाओ = आशंसाः
आहणिअं = आभणितम्

इ

इअं = इयम्
इत्थि = स्त्री
इत्थिआणं = स्त्रीणाम्
इदो = इतः
इमाओ = इमाः
इव्व = इव
इंदुलेहा = इन्दुलेखा

उ

उअविस = उपविश
उइद = उचित
उज्जलदि = उज्ज्वलति
उत्ती = उक्तीः
उदक्कं = उदर्कम्
उदाला = उदाराः
उदिअं = उदितम्
उपविस = उपविश
उपहारअं = उपहारकम्
उप्पत्तिं = उत्पत्तिम्
उब्भुअ = उद्भव
उमालभावो = कुमारभावः
उवकरणाइ = उपकरणानि
उवट्ठिदा = उपस्थिता
उवरूअअं = उपरूपकम्
उवहरेमि = उपहरामि

उवाअणं = उपायनम्
उस्सवं = उत्सवम्

ए

एक्कक्कं = एकैकम्
एतं = एतत्
एत्थ = अत्र
एदस्स = एतस्य
एदं = एतत्
एदाओ = एताः
एदाणं = एतेषाम्
एदिणा = एतेन
एदिस = ईदृश
एदेण = एतेन
एदेहिं = एतैः
एव्वं = एवम्
एसा = एषा
एसो = एषः

ओ

ओअण्णस्स = उत्पन्नस्य
ओसरो = अवसरः

क

कडक्खिआ = कटाक्षिता
कप्पपाअव = कल्पपादप
कमलेक्खण = कमलेक्षण
कहं = कथम्
कहिदाओ = कथिताः
कहेमि = कथयामि
कंखणिज्जं = कांक्षणीयम्
कंति = कान्ति
क्खु = खलु
कारएण = कारकेण
कालणं = कारणम्
कालिआए = कालिकायाः
किदं = कृतम्
किदे = कृते
किंअ = किञ्च
किंवि = किमपि
कुमाल = कुमार
कुमालो = कुमारः
कुसुमेसु = कुसुमेषु
कुलदेवदे = कुलदेवते
कुलिसं = कुलिशम्
कुसलं = कुशलम्
केआहिं (दं०) = केशान्

ख

खणमेत्तं = क्षणमात्रम्
खणं = क्षणम्
खम्मस्स = क्षमस्य
क्खाम = क्षाम
क्खु = खलु
क्खिण्णं = खिन्नाम्
खु = खलु

ग

गज्जिदं = गर्जितम्
गदं = गतम्
गब्भ = गर्भ
गब्भादो = गर्भतः
गरु = गुरु
गंधव्व = गन्धर्व
गुणाइं = गुणान्
गोवद्धण = गोवर्धन

घ

घरं = गृहम्
घणरअ = घनरव
घोस = घोष

च

चदुराणणो = चतुराननः
चमक्कार = चमत्कार
चलणं = चरणम्
चिट्ठई = तिष्ठति
चिठ्ठदु = तिष्ठतु

छ

छाआ = छाया

ज

जअ = जय
जअइ = जयति
जइ = यदि
जक्ख = यक्ष
जण्ण = यज्ञ
जलणइ = जलनदी
जलइ = ज्वलति
जस्स = यस्य
जहा = यथा
जं = यम्
जंतूणं = जन्तूनाम्
जा = या
जाणिअ = ज्ञात्वा
जाणिदं = ज्ञातम्
जाणे = जाने
जाद = जात
जावअ = यावक
जाव = यावत्
जीवंतं = जीवन्
जीवादु = जीवातु
जुअलेन = युगलेन
जेण = येन
जो = यः
जोइ = ज्योतिः
जोईसरस्स = योगीश्वरस्य
जोग्गा = योग्या

ठ

ट्ठाई = स्थायी

ण = न

णमो = नमः
णवं = नवम्
णव = नव
णहाणी (दे०) = सरसी
णाम = नाम
णिउणिए = निपुणिके
णिरूपणिज्जं = निरूपणीयम्
णिरूपेहि = निरूपय
णिव्वत्तिअ = निर्वर्तयित्वा
णिव्वेदेण = निर्वेदेन
णिरूवेमि = निरूपयामि
णिसा = निशा
णिहाणं = निधानम्
णीसत्त = निस्सत्त्व
णु = नु
णूणं = नूनम्
ण्हाण = स्नान

त

तदो = ततः
तणअ = तनय
तणु = तनु
तरंगिअं = तरङ्गितम्
तस्स = तस्य
तं = तत्
ता = तद्
तादिसाणं = तादृशानाम्
तारिसो = तादृशः
ति = इति
तित्थति = तिष्ठति
तिलोअ = त्रिलोक
तिहुवण = त्रिभुवन
तेल्लोक्क = त्रैलोक्य

द

दइअस्स = दयितस्य
दक्खो = दक्षः
दट्ठूण = दृष्ट्वा
दणुसुद = दनुसुत
दस्सअंतीए = दर्शयन्त्याः
दंसणं = दर्शनं
दंसणादो = दर्शनतः
दंसेदुं = दर्शयितुम्
दंसेमि = दर्शयामि
दंसेहि = दर्शय
दाव = तावत्
दिज्जइ = दीयताम्
दिट्ठिआ = दिष्ट्या
दिट्ठी = दृष्टिः
दिट्ठो त्ति = दृष्टेति
दिढं = दृढम्
दिणअर = दिनकर
दिव्व = दिव्य
दिव्वं = दिव्यम्
दिसापईणं = दिशापतीनाम्

दिप्प = दीप्र
दीविआ = दीपिका
दुज्जणो = दुर्जनः
दुक्ख = दुःख
दुदीआ = द्वितीया
देअ = देव
देअदेअं = देवदेवम्
देई = देवी
देवइ = देवकी
देवईए = देवक्याः
देवलोए = देवलोके
देवदा = देवता
दोहल = दोहद

ध

धारअंती = धारयन्ती
धारेंती = धारयन्ती
धारेदुं = धारयितुम
धुणइ = धुनोति

न

निअम = नियम

प

पआवो = प्रभावः
पइणो = पतेः
पआसस्स = प्रकाशस्य
पच्चक्ख = प्रत्यक्षम्
पडिघरं = प्रतिगृहम्
पडिभाइ = प्रतिभाति
पडिहदं = प्रतिहतम्
पडिहासो = परिहासः
पत्थुदं = प्रस्तुतम
परमत्थं = परमार्थम्
परिआरिआए = परिचारिकया
परिणद = परिणत
परिधावेहि = परिधापय
परिपाओ = परिपाकः
परिपुण्ण = परिपूर्णं
परिलिखिअं = परिलिखितम्
परिसदं = परिषदम्
पलास = पलाश
पव्व = पर्व
पविसामि = प्रविशामि
पवुत्तं = प्रवृत्तम
पसव = प्रसव
पसाद = प्रसाद
पसादेण = प्रसादेन
पट्टंसुअ = पट्टांशुक
पायाल = पाताल
पाणं = पानम्
पावसीलो = पापशीलः
पावं = पापम
पिअसहि = प्रियसखि
पिअं = प्रियम्
पिऊणि = पितुः

पिदामहेण = पितामहेन
पिपासुणो = पिपासोः
पिसुण = पिशुन
पुण्ण = पुण्य
पुप्फा = पुष्पा
पुप्फाइ = पुष्पाणि
पुरुव = पूर्व
पुरुसस्स = पुरुषस्य
पूजिदाणं = पूजितानाम्
पूरिआ = पूरिता
पेक्ख = प्रेक्षस्व
पेक्खामो = प्रेक्षामहे
पेडिआ = पेटिका
पोरजन = पौरजन
प्पदं = प्रदम्
प्पमाणं = प्रमाणम्
प्पमाणी = प्रमाणी
प्पमुदिआ = प्रमुदिता
प्पमुहेहिं = प्रमुखैः
प्पमुहो = प्रमुखः
प्पवालं = प्रवालम्
प्पसादो = प्रसादः
प्पसारेहि = प्रसारय
प्पसूद = प्रसूत
प्पाणं = प्राणम्

फ

फलिदं = फलितम्
फलेण = फलेन

ब

बम्हणाणं = ब्राह्मणानाम्
बहिअ = बाह्य
बंधण = बन्धन
विंदावणम्मि = वृन्दावने

भ

भअवदि = भगवति
भआहि = बिभेहि
भइणीए = भगिन्यै
भट्टिणी = भट्टिनी
भणिदं = भणितम्
भणिदव्वं = भणितव्यम्
भद्दे = भद्रे
भलाइं = भद्राणि
भविस्सदि = भविष्यति
भाअहेअं = भागधेयम्
भाअधेअगदं = भागधेयगतम्
भाअहेआइ = भागधेयानि
भाइ = भाति
भाव्वं = भावम्
भावेमि = भावयामि
भासिदं = भाषितम्
भुजलदा = भुजलता
भुवणे = भुवने
भूएहिं = भूयः

भूसणेहिं = भूषणैः
भूसेहि = भूषय
भोदी = भवती

म

मअ = मद
मए = मया
मह = मम
मज्झम्मि = मध्ये
मणिमअ = मणिमय
मणोरह = मनोरथ
महइ = महती
महग्घं = महार्घम्
महदा = महता
महप्पणो = महात्मनः
महंताणं = महताम्
महापुरुसस्स = महापुरुषस्य
महाफलाइं = महाफलानि
महुरा = मधुरा, मथुरा
महुरिआ = मधुरिका
महूसवेण = महोत्सवेन
मंगल्ल = मङ्गल्य
मंगलेहि = मङ्गलैः
माहप्पं = माहात्म्यम्
मिअतिण्हा = मृगतृष्णा
मिलाअमाणं = म्लायमानम्
मिलाअंती = म्लायन्ते
मुत्ताफल = मुक्ताफल
मुह = मुख
मुहलं = मुखरम
मुहादि = मुखादि
मुहुत्ते = मुहूर्ते
मुहाइं = मुखानि
मेत्तं = मात्रम
मेहमाला = मेघमाला
मोदो = मोदः
मोरीए = मयूर्याः
मोलिसुं = मौलिषु

र

रअणा = रञ्जनाय
रक्खस = राक्षस
रम्मा = रम्या
राअउलाइ = राजकुलानि
राअउल = राजकुल
रीइं = रीतिम
रूअ = रूप

ल

लक्खणं = लक्षणम्
लक्खणाइं = लक्षणानि
लक्खणाणं = लक्षणानाम्
लद्धं = लब्धम्
लंछणं = लाञ्छनम्
लावण्ण = लावण्य

लावण्णअं = लावण्यकम्
लिहिदं = लिखितम्
लीलाए = लीलया
लोअ = लोक
लोए = लोके
लोओ = लोकः

व

वअणं = वचनम्
वक्क = अपत्य
वक्करेआओ = अपत्यरेखाः
वढ्ढसि = वर्धसे
वण्णेदुं = वर्णयितुम्
वदण = वदन
वलअं = वलयम्
वसुदेव्वस्स = वसुदेवस्य
वसेअं = वसेयम्
वसुदेवेण = वसुदेवेन
वहइ = वहति
वासरस्स = वासरस्य
वि = अपि
विअ = इव
विअड्ढ = विदग्ध
विअप्प = विकल्प
विअसिअ = विकसित
विजंभिदेण = विजृम्भितेन
विणिहिदं = विनिहितम्

विदाण = वितान
विदिअं = विदितम्
विमेद्दुसु = विद्रुमेसु
विभूसणं = विभूषणम्
विलसदि = विलसति
विलसिदं = विलसितम्
विलोअण = विलोचन
विवसअइ = विवशयति
विसादस्स = विषादस्य
विसादेण = विषादेन
विसादो = विषादः
विस्सवेइणी = विश्ववेदिनी
विस्स = विश्व
विस्ससणिज्जं = विश्वसनीयम्
विस्संभरा = विश्वम्भरा
विस्सातिओ = विश्वातिगः
विहवं = विभवम्
विहाणं = विधानम्
विहाण = विधान
विहि = विधि
विहिणा = विधिना
वीहलाए = विह्वलायाः
वुत्तं = वृत्तम्
वुत्तंतेण = वृत्तान्तेन
वुड्ढाओ = वृद्धाः
वेउट्ठं = वैकुण्ठम्

वेदणा = वेदना

स

सअल = सकल
सअं = शतम्
सइणो = शशिनः
सक्कं = शक्यम्
सक्कंति = सत्क्रान्ति
सग्गतं = स्वर्गत न्
सचीए = शच्याः
सच्चासईए = सत्यमग्याः
सच्चं = सत्यम्
सजंती = सृजन्ती
सद्दावेदि = शब्दापयन्ति
सपरिवाआ = सपरिवारा
सप्प = सर्प
समइस्सदि = शमिष्यति
समहिअ = समधिक
समाअरिदं = समाचरितम्
समिद्ध = समृद्ध
समुहस्स = समूहस्य
सरस्सई = सरस्वती
सवत्ती = सपत्नी
सवत्तीओ = सपत्न्यः (सख्यः)
सव्वलोआहिमदं = सर्वलोकाभिमतम्
सव्वहा = सर्वथा
सव्वं = सर्वम्

सव्वत्थ = सर्वार्थ
संकप्पो = सङ्कल्पः
संगीअ = सङ्गीत
संजीवण = सञ्जीवन
सन्तं = शान्तम्
संति = शान्ति
संदसेइ = संदर्शयति
संपण्ण = सम्पन्न
संपण्णाइ = सम्पन्नानि
संभवई = सम्भविष्यति
संमोदमाण = सम्मोदमान
सागदं = स्वागतम्
सामन्तवहू = सामन्तवधू
सामंतादो = सामन्ततः
साहणांकं = साधनाङ्कम्
साहु = साधु
सिध्धिसलाकए = सिद्धिशलाके
सिनेह = स्नेह
सिरिणिहा = श्रीनिभा
सिरीस = शिरीष
सिविणिअ = स्वप्न
सिविणे = स्वप्ने
सिसिर = शिशिर
सिहिणी = शिखिनी
सिंहासणम्मि = सिंहासने
सिंहासणं = सिंहासनम्
सीअलं = शीतल

सुइ = श्रुति
सुग = शुक
सुद्धा = शुद्धा
सुणह = शृणुत
सुणादु = शृणोतु
सुलक्खणाइं = सुलक्षणानि
से = अस्याः
सेलं = शैलम्
सेविदा = सेविता
सोपमाणम् = सोपमानम्
सोभग्ग = सौभाग्य
सोभग्गा = सौभाग्या
सोहग्गं = सौभाग्यम्

सोहणं = शोभनम्
सोहण = शोभन

ह

हत्थ = हस्त
हदअस्स = हतकस्य
हरिणो = हरेः
हिअअं – हृदयम्
हिअएसु = हृदयेषु
हिंडुज्जए = हिण्डामि
होदव्वं = भवितव्यम्
होहि = भव
हुतवहणं = हुतवहनम्
ह्मित = स्मित